UDYAM-RJ-17-0210612

WWW.NAYIGOONJ.COM
GOONJNAYI@GMAIL.COM

मई 2023

शोध साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट मासिक पत्रिका नई गूँज

- साक्षात्कार- डॉ. शेखर चंद्र जोशी
  (चित्रकला विभागाध्यक्ष)
- लेख - जनसंख्या शिखर : उपलब्धि नहीं चुनौती
- कविता - अथ पर देखा है
- निबंध- भ्रष्टाचार: करण और निवारण

9785837924

NAYI GOONJ – SHODH , SAHITYA EVAM SANSKRITI (MONTHLY) MAGAZINE

शोध , साहित्य और संस्कृति की मासिक वैब पत्रिका

नयी गूंज-------.

वर्ष 2023

अंक 5

WEBSITE- nayigoonj.com
Email address goonjnayi@gmail.com -
WHATSAPP NO. 91-9785837924

मई 2023

संपादक मंडल

प्रमुख संरक्षक

प्रो. देव माथुर

vishvavishvaaynamah.webs1008@gmail.com

मुख्य संपादक

रीमा माहेश्वरी

shuddhi108.webs@gmail.com

संपादक

शिवा 'स्वयं'

sarvavidhyamagazines@gmail.com

शाखा प्रमुख

ब्रजेश कुमार

aryabrijeshsahu24@gmail.com

वरिष्ठ परामर्श दाता तथा पब्लिक ऑफिसर

सीमा धमेजा

डायरेक्टर

प्रज्ञा इंस्टीट्यूट जयपुर

Praggyainstitutejpr@gmail.com

9351177710

परामर्शदाता

कमल जयंथ

jayanth1kamalnaath@gmail.com

सम्पादकीय

संकल्प शक्ति

शिवा स्वयं

जिन खोजा तिन पाइयां

गहरे पानी पैठ

मैं बूढ़ा बूढ़न डरा

रहा किनारे बैठ

जो प्रयत्न करते हैं वे कुछ ना कुछ पा ही लेते हैं जैसे कोई मेहनत करने वाला गोताखोर गहरे पानी में जाता है और कुछ लेकर ही आता है लेकिन कुछ बेचारी लोग ऐसे भी होते हैं जो डूबने के भय से किनारे पर ही बैठ जाते हैं और कुछ भी नहीं पाते

संकल्प शील व्यक्ति कठिन परिश्रम के द्वारा लक्ष्य को प्राप्त कर देते हैं

इस दोहे में कबीर दास जी मनुष्य को आलस्य व भय त्याग कर पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देते हैं

जो खोजना नहीं चाहता है वही मांगता है खोजना व मांगना, एक बात तो है नहीं तो लोग विपरीत बातें हैं

खोजी कभी नहीं मांगता, खोजने से जो बचना चाहता है केवल वही मांगता है

खोज और मांगने की प्रक्रिया बिल्कुल अलग-अलग है मांगने में दूसरे पर ध्यान रखना पड़ेगा - जिससे मिलेगा और खोजने में अपने पर ध्यान रखना पड़ेगा- जिसको मिलेगा

अगर कोयले को हीरा बनना हो तो कोयले को तो मिटना ही पढ़ता है अगर हीरा बनेगा तो कोयला तो मिटेगा ही, तो ही तो हीरा बनेगा .....शायद आपको ख्याल न हो कि कोयले और हीरे में कोई जातिगत भेद नहीं होता कोयला और हीरा एक ही तत्व होते हैं कोयला ही एक लंबे अरसे में हीरा बन जाता है हीरे व कोयले में केमीकली कोई बुनियादी फर्क नहीं होता

नदी सागर की तरफ बढ़ती है तो सागर से मिलने में तो बड़ा खतरा है ही नदी मिटेगी नदी बचेगी नहीं जिस सरिता को सागर होना होता है वह तो मिटती ही है वह खोती कुछ नहीं है, बस सागर हो जाती है

हम सब सिक्योरिटी प्रेमी है डर लगता है, कहीं मिट न जाए, कहीं खो ना जाए, कहीं समाप्त न हो जाए, तो सुरक्षा करने के लिए दीवारें बनाओ किले बनाओ, छुप जाओ , अपने को छुपा लो सब खतरों से

प्रयत्न करने से भी हम इसी तरह, इसीलिए ही बचना चाहते हैं कि वहां खतरा है, कैसे करेंगे, आसानी को चुन लेते हैं, आसानी से हीरा नहीं मिलता आसानी से पत्थर मिल जाते हैं आसानी से घास उगती है गुलाब नहीं

बच्चा साइकिल चलाना नहीं सीखेगा अगर सीखते सीखते नहीं गिरेगा अगर तो गाड़ी कैसे चलाएगा | आप जितनी सफलता चाहते हो उतनी ठोकरे भी खाने ही पड़ेगी आपको

खोजने चलोगे तभी तो मिलेगा मांगने से तो वही मिलेगा जो किसी और का खोजा हुआ है, किसी और के खोजे हुए से आपको आत्म संतुष्टि कैसे प्राप्त हो सकती है ,

एक बच्चा कितना भी प्रयत्न करने पर थकता नहीं है ना ही वह अपने आपको आत्म ग्लानि से भर देता है

वो अपनी हर हार पर भी मुस्कुरा देता है | जब तक हम बच्चे की तरह सरल और सहज नहीं हो जाते , तब तक कोई नई खोज नहीं कर सकते

खोजने के लिए झुझारु होना पड़ता है, खुद को मिटा देना पड़ता है

सरल न हो चाहें मुश्किल ही हो लेकिन मांगे हुए से बेहतर खुद की मेहनत से पाया हुआ होता है |

इसलिये पुरुषार्थ से वनाइये अपने जीवन को.... गोताखोर बनिये.. जीवन में से मोती चुनिए, हीरे ढूंढ लीजिये.. सब उतना ही दूर हैँ ज़ब तक आप खड़े नहीं होते हैँ..

शुभेच्छा

नयी गूंज------. परिवार

परामर्शदाता-

प्रश्न है कि संस्कृति क्या है। यूं संस्कृति शब्द सम्+कृति से बना है, जिसका अर्थ है अच्छी कृति। अर्थात् संस्कृति वस्तुतः राष्ट्रीय अस्मिता के परिचायक उदात्त तत्वों का नाम है।

भारतीय सन्दर्भ में संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर समष्टिनिष्ठ होती है। संस्कृति की संरचना एक दिन में न होकर शताब्दियों की साधना का सुपरिणाम होता है। अतः संस्कृति सामासिक-सामाजिक निधि होती है। संस्कृति वैचारिक, मानसिक व भावनात्मक उपलब्धियों का समुच्चय होती है। इसमें धर्म, दर्शन, कला, संगीत आदि का समावेश होता है। इसी की अपरिहार्यता की ओर संकेत करते हुए भर्तृहरि ने लिखा है कि इसके बिना मनुष्य घास न खाने वाला पशु ही होता है-

"साहित्यसंगीतकला-विहीनः

साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।।

मुख्य संपादक

उपनिषद् के शब्दों में कहें तो संस्कृति में जीवन के दो आयाम श्रेय व प्रेय का सामंजस्य होता है। इन्हीं आधार पर आध्यात्मिक, वैचारिक व मानसिक विकास होता है और इन्हीं के आधार पर जीवन-मूल्यों व संस्कारों का निर्धारण होता है और यही जीवन के समग्र उत्थान के सूचक होते हैं। शिक्षा-तंत्र में इन्हीं सांस्कृतिक मूल्यों का शिक्षण-प्रशिक्षण होता है। वर्तमान में शिक्षा-व्यवस्था संस्कृति की अपेक्षा सभ्यता-निष्ठ अधिक है। तात्पर्य है कि वर्तमान शिक्षा विचार-प्रधान, चिन्तन-प्रधान व मूल्यप्रधान की अपेक्षा ज्ञानार्जन-प्रधान है। वस्तुतः इसी का परिणाम है कि सम्प्रति शिक्षा के द्वारा बौद्धिक स्तर में तो अभिवृद्धि हुई है किन्तु संवेदनात्मक या भावनात्मक स्तर घटा है।

संपादक -

हमारी शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर पश्चिमी सभ्यता-मूलक तत्वों को उपादान के रूप में

ग्रहण कर लिया गया है। तभी तो शिक्षा व समृद्धि के पाश्चात्य मानदण्डों को आधार मान लिया है जो संस्कृति-विरोधी हैं, जिनमें नैतिक व मानवीय मूल्यों का विशेष स्थान नहीं है। इसी का परिणाम है कि बुद्धिमान व गरीब नैतिक व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से भी हांसिये पर ही रहता है और नैतिकता-विहीन, संवेदनहीन, भ्रष्टाचारी व अपराधी भी सम्पन्न, सभ्य, सम्मान्य व प्रतिष्ठित होता है। इसी संस्कृति-विहीन व्यवस्था के कारण शोषण-प्रधान पूंजीवादी व्यवस्था ही ग्राह्य हो गई है, जिसने रहन-सहन के स्तर को तो उठाया है, पर इस भोगवादी बाजारवादी व्यवस्था के कारण अर्थशास्त्र व तकनीकिविज्ञान के सामने नैतिकता व मानवीयता गौण हो गई है। जबकि राधाकृष्णन व कोठारी आयोग की मान्यता थी कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन सके। इस दृष्टि से भारतीय प्रकृति और संस्कृति के अनुरूप शिक्षा से ही मूल्यपरक उदात्त-गुणों का संप्रेषण और समग्र व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है। इसमें पुराने व नये का बिना विचार किये जो देश की अस्मिता व समाज के हितकर है, उसी को प्रमुखता देनी चाहिए।

शाखा प्रमुख की कलम से--

प्रिय पाठकों

संस्थान की पत्रिका नयी गूंज के पहले अंक का लोकार्पण एक आंतरिक सुख की अनुभूति करा रहा है।

मुझे प्रसन्नता है कि शाखा प्रमुख *के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मुझे आप सभी से नयी गूंज के इस अंक के माध्यम से रूबरू होने का मौका मिल रहा है।*

हम कितना भी विकास कर लें किन्तु यदि समाज में संवेदना ही मर गई तो सब व्यर्थ है। इस संवेदनहीनता के चलते समाज में नकारात्मक ऊर्जा दिन प्रति-दिन बढ़ती जा रही है जो निन्दनीय भी है और विचारणीय भी। आवश्यकता है कि हम अविलम्ब इस दिशा में अपने प्रयास आरम्भ कर दें।

वस्तुतः अपने कर्मों से हम अपने भाग्य को बनाते और बिगाड़ते हैं। यदि गंभीरता से चिंतन-मनन किया जाय तो हमारा कार्य-व्यापार हमारे व्यक्तित्व के अनुसार ही आकार ग्रहण करता है और हमें अपने कर्म के आधार पर ही उसका फल प्राप्त होता है। कर्म सिर्फ शरीर की क्रियाओं से ही संपन्न नहीं होता अपितु मनुष्य के विचारों से एवं भावनाओं से भी कर्म संपन्न होता है। वस्तुतः जीवन-भरण के लिए ही किया गया कर्म ही कर्म नहीं है हम जो आचार-व्यवहार अपने माता-पिता बंधु मित्र और रिश्तेदार के साथ करते हैं वह भी कर्म की श्रेणी में आता है। मसलन हम अपने वातावरण सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक

समीकरणों आदि के प्रति जितना ही संवेदनशील होंगे हमारा व्यक्तित्व उतनी ही उच्चकोटि की श्रेणी में आयेगा।

आज के जटिल और अति संचारी जीवन-वृति के सफल संचालन हेतु सभी का व्यक्तित्व उच्च आदर्शों पर आधारित हो ऐसी मेरी अभिलाषा है।

यह ज़रूरी नहीं है कि हर कोई हर किसी कार्य मे परिपूर्ण हो, परन्तु अपना दायित्व अपनी पूरी कोशिश से निभाना भी देश की सेवा करने के समान ही है। संपूर्ण कर्तव्यनिष्ठा से किया हुआ कार्य आपको अवश्य ही कार्य-समाप्ति की संतुष्टि देगा। कोई भी किया गया कार्य हमारी छाप उस पर अवश्य छोड़ देता है अतएव सदैव अपनी श्रेष्ठतम प्रतिभा से कार्य संपन्न करें। हर छोटी चर्या को और छोटे-से-छोटे से कार्य के हर अंग का आनंद लेकर बढ़ते रहना ही एक अच्छे व्यक्तित्व का उदाहरण है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि नयी गूंज एक उच्च स्तरीय पत्रिका है जिसमें विभिन्न विधाओं में उच्चस्तरीय लेखों का अनूठा संग्रह है

आप सभी पत्रिका का आनन्द लें एवं अपनी प्रतिक्रियायें ऑनलाइन या ऑफलाइन भेजें।

नयी गूंज के माध्यम से हमारा आपका संवाद गतिशील रहेगा। आप सभी अपनी सुन्दर व श्रेष्ठ रचनाओं से नयी गूंज को निरन्तर समृद्ध करते रहेंगे इसी विश्वास के साथ।

अंत में मैं सभी सम्पादक मण्डल के सदस्यों एवं रचनाकारों को नयी गूंज पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए साधुवाद ज्ञापित करता हूं करता हूँ।

आप सभी को हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद!!

कालिदास ने काव्य के माध्यम से कहा है-

पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते
मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः।।

अर्थात् पुरानी ही सभी चीजें श्रेष्ठ नहीं होती और न नया सब निन्दनीय होता है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति परीक्षा करके जो हितकर होता है उसी को ग्रहण करते हैं जबकि मूर्ख दूसरों का ही अन्धानुकरण करते हैं।
अस्तु, निर्विवाद रूप से यह सभी स्वीकार करते हैं कि राष्ट्र की रक्षा, का सकारात्मक पक्ष होता है।

प्रकाशन सामग्री भेजने का पता

ई-मेल:goonjnayi@gmail.com

नयी गूंज इंटरनेट पर उपलब्ध है। www.nayigoonj.com पर क्लिक करें।

नयी गूंज में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है

शुल्क दर 40/-

वार्षिक: 400/-

WEBSITE- nayigoonj.com
Email address goonjnayi@gmail.com -
WHATSAPP NO. 91-9785837924

त्रैवार्षिक: उपर्युक्त शुल्क-दर का अग्रिम भुगतान 1200/-

को ----------द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

नियम निर्देश

1 रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।

2 लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आँकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए। प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

3 अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान संपादक मंडल प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।

4 प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी।

नई गूँज नियमावली

रचनाएं goonjnayi@gmail. Com ई-मेल पते पर भेजी जा सकती हैं। रचनाएं भेजने के लिए नई गूँज के साथ लॉग-इन करें, यह वांछित है।आप हमारे whatsapp no. 9785837924 पर भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं

प्रिय साथियों,

नई गूँज हेतु आपके सहयोग के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। आशा है कि ये संबंध आगे भी प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेंगे। आगामी अंक हेतु आप सबके सक्रिय सहयोग की पुनः आकांक्षा है। आप सभी से एक महत्वपूर्ण अनुरोध है कि आप अपने शोध प्रपत्र निम्न प्रारूप के तहत ही प्रस्तुत करें जिससे कि हमें तकनीकी जटिलताओं का सामना न करना पड़े -

1.प्रकाशन हेतु आपकी रचना के मौलिक होने का स्वतः सत्यापन **रचना प्रेषित करते समय "मौलिकता प्रमाण पत्र" पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य है। इसके बिना रचना पर विचार करना संभव नहीं होगा**

2. रचना कहीं पर भी पूर्व में प्रकाशित नहीं होनी चाहिए !

3. आपकी रचनाएँ ए**म.एस. ऑफिस** में टाइप होना चाहिए

4. **फोंट** - कृतिदेव **10**, मंगल यूनिकोड

5. रचनाओं के साथ अपना पूर्ण पता, मोबाइल नंबर, ईमेल तथा पासपोर्ट साइज की फोटो लगाना अपेक्षित है !

6. आप लेख, कविता, कहानी, किसी भी विधा में रचनाएँ भेज सकते हैँ !

नई गूँज रचनाओं के प्रेषण सम्बंधित नियम व शर्तें :

एक से अधिक रचनायें एक ही वर्ड-डॉक्यूमेंट में भेजें।

रचनायें अपने पंजीकृत पेज पर दिए गए लिंक इस्तेमाल कर प्रेषित करें।

यदि आप हिंदी में टाइप करना नहीं जानते हैं, आप गूगल द्वारा उपलब्ध करवायी गयी लिप्यान्तरण सेवा का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए Google इनपुट उपकरण लिंक पर जाएँ।

स-आभार

संपादक मंडल

Note:- प्रत्येक रचना लेखक की स्वयं मौलिक तथा लिखित है! इसमें लेखक के स्वयं के विचार हैं तथा कोई त्रुटि होने पर लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा!

अनुक्रमाणिका-

मई -2023

क्रम संख्या	विवरणिका	लेखक	पृष्ठ संख्या
	लेख –		
1	जनसंख्या शिखर : उपलब्धि नहीं चुनौती	डॉ घनश्याम बादल	1 – 3
2	महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा की रोकथाम	डॉ शिवा धमेजा	4 – 6
3	हमारी कालजयी संस्कृति	डॉ आर बी भंडारकर	7 – 8
	कविता		
4	अथ पर देखा है	गिरेंद्र भदौरिया प्राण	9
5	नन्ही चिड़िया	प्रिया देवांगन	10
6	जा रहा हूं बाबू जी / कौन भरेगा हुंकार	डॉ उमेश प्रताप वत्स	11 – 12
7	अनुभव	बृजेश कुमार	13 – 14
8	कलम आज उनकी जय बोल	रामधारी सिंह दिनकर	15
	कहानी		
9	दस्तावेज	श्यामल बिहारी महतो	16 – 21

10	नारी अबला नहीं सबला है महारानी तपस्विनी		22 – 25
11	आलेख – महान ऋषि योद्धा के साथ समरसता के भी महान पुरोधा थे भगवान परशुराम	डॉ उमेश प्रताप वत्स	26 – 30
12	गजल	केशव शरण	31 - 32
13	निबंध भ्रष्टाचार कारण और निवारण		33 – 40
14	साक्षात्कार- डॉ. शेखर चन्द्र जोशी (चित्रकला विभागाध्यक्ष तथा कला क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान)		41 - 45
15	रोचक तथ्य		46 - 48

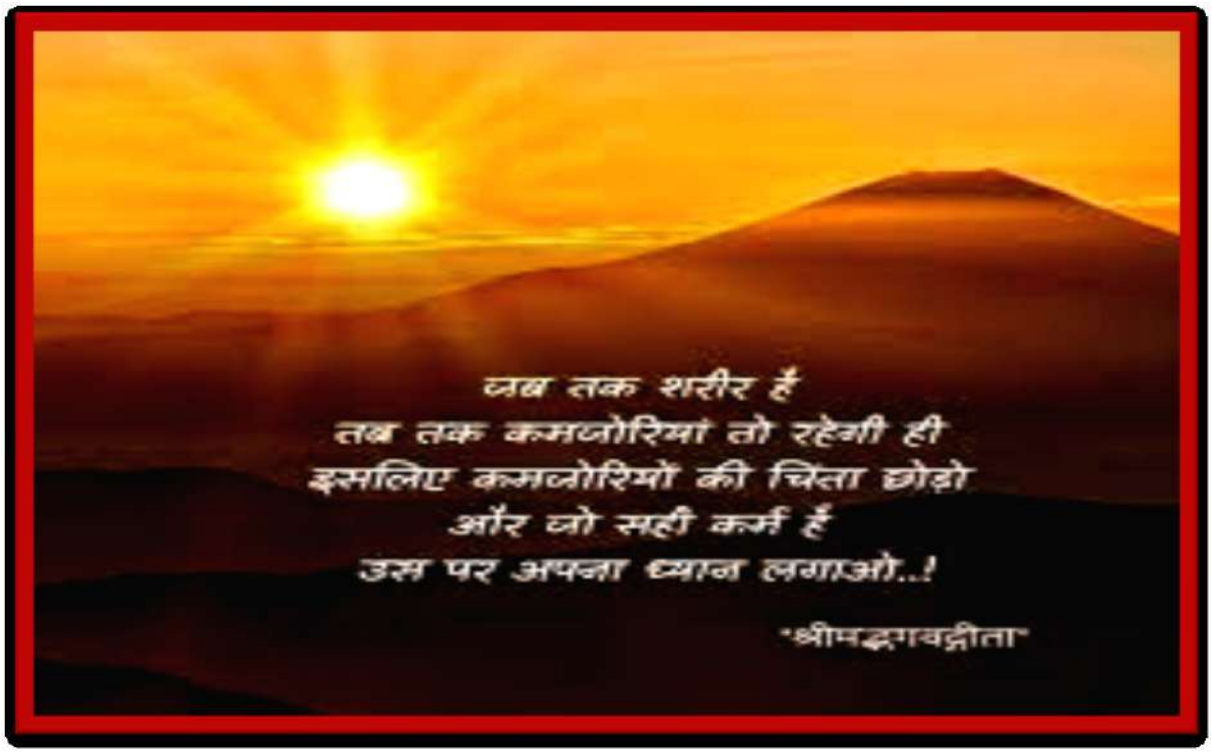

जनसंख्या शिखर : उपलब्धि नहीं चुनौती

डॉ घनश्याम बादल

हिंदुस्तान चीन को पछाड़कर भारत जनसंख्या का सिरमौर देश बन गया है। ऐसी संभावनाएं पहले से ही जाहिर की जा रही थी की भारत जल्द ही चीन को जनसंख्या वृद्धि के मामले में पीछे छोड़ देगा पर यह संभावना 2028 के आसपास जाहिर की जा रही थी मगर भारत में यह काम 2023 में ही कर दिया है। भारत में जनसंख्या का ग्राफ जिस तेजी से बढ़ा है वह हैरतअंगेज है और सुरसा बढ़ती हुई विशाल जनसंख्या ने हर उपलब्धि को बौना साबित किया है।

अशिक्षा, गरीबी, रूढ़िवादिता, धार्मिक कट्टरता और अपने संप्रदाय विशेष को हावी करने की कुटिल इच्छा जैसे कितने ही कारण है इस जनसंख्या रूपी अजगर के निरंतर बड़े होते जाने के । यह अजगर हर भारतीय के हिस्से में आने वाली चीजों को कम कर रहा है ।

1947 में आजाद हुए 36 करोड़ लोगों का देश महज 75 साल में ही 142.86 करोड़ जनसंख्या वाले दुनिया के सबसे बड़े जनसंख्या राष्ट्र में बदल गया । इन 75 सालों में भारत की जनसंख्या 3 गुना से भी ज्यादा बढ़ी है ।जनसंख्या वृद्धि दर इतनी ऊंची है कि प्रतिवर्ष न्यूजीलैंड व ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों की कुल जनसंख्या से भी ज्यादा लोग हमारी आबादी में जुड़ रहे हैं । स्वाभाविक रूप से सुरसा के मुख सी बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए खाने, पहनने और रहने की समस्याएं भी विकराल रूप लेती गईं।

राष्ट्रीय सरकारों में जनसंख्या नियंत्रण के उपायों लागू करने के लिए जो प्रतिबद्धता चाहिए थी हर सरकार से गायब नज़र रही है। इसके पीछे सबसे बड़ी राजनीतिक मजबूरी थी देश के एक खास वर्ग का वोट पैकेज में तब्दील हो जाना। जब तक देश में कांग्रेस की सरकारें रही यह वोट पैकेज उसको सत्ता दिलाता रहा और इसी सत्ता के लालच ने जनसंख्या नियंत्रण कानून को अस्तित्व में आने से रोके रखा ।

जहां हिंदू धर्म के उच्च वर्गों में 'हम दो हमारे दो' के नारे से जन जागृति आई वहीं अब तो 'बच्चा एक ही अच्छा' के सिद्धांत पर एक बहुत बड़ा वर्ग चल रहा है । इस वर्ग ने अपनी जनसंख्या की वृद्धि पर काफी हद तक नियंत्रण कर लिया है । हालांकि हिंदू समाज के भी निचले तबकों में अभी वह जागृति देखने को नहीं मिलती ती जो होनी चाहिए । अब समय आ गया है कि समय के साथ केंद्र एवं राज्य सरकारों को निष्पक्ष तरीके से सबका साथ 'सबका साथ सबका विकास' नारे को धरातल पर उतारते हुए, पूरी प्रतिबद्धता के साथ पूरे देश में जनसंख्या नियंत्रण कानून लागू कर ही देना चाहिए ।

जनसंख्या नियंत्रण कानून के अंतर्गत इस प्रकार के प्रावधानों का होना आवश्यक हो कि एक सीमित संख्या तक ही परिवार बढ़ने पर लोगों को सब्सिडी, लोन या राशन आदि की सुविधा मिले। निर्धारित संख्या से ऊपर संतान उत्पत्ति पर प्रतिबंधात्मक प्रावधानों का होना जरूरी है । ऐसी नीति के क्रियान्वयन में धार्मिक एवं सामाजिक प्रतिरोध भी खड़ा किया सकता है अतः जनसंख्या नियंत्रण कानून को चरण दर चरण लागू करने की नीति अपनाई जा सकती है । जिस प्रकार से कई दूसरे देशों में संतान उत्पत्ति के नियम हैं उसी प्रकार से देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए हमारी सरकारों को भी ऐसे प्रावधान अस्तित्व में लाने ही चाहिएं।

जनसंख्या नियंत्रण प्रावधानों को लागू एवं क्रियान्वित करते समय सबसे अधिक जरूरी है अभिप्रेरक तरीके से जन जागरण अभियान चलाए जाएं । खास तौर पर कम शिक्षित या अशिक्षित एवं धार्मिक विचारों से अधिक प्रभावित होने वाले लोगों के लिए ऐसे ही धार्मिक संस्थानों की सहायता ली जा सकती है जो उन्हें बताएं कि संतान केवल ईश्वर की देन नहीं है अपितु यह एक शारीरिक प्रजनन क्षमता का परिणाम है।

लोगों को समझाया जाए कि जितने अधिक बच्चे होंगे उसी अनुपात में उन्हें उतना ही कम खाना-पीना, पहनना एवं रहने का स्थान उपलब्ध हो पाएगा जिसके परिणाम स्वरूप वें हमेशा नीचे के पायदान पर ही रहेंगे और उनका जीवन स्तर भी निम्न श्रेणी का ही रहेगा। उन्हें यह भी समझाया जाए कि अधिक संख्या में बच्चे पैदा करना कोई सबाब का काम नहीं अपितु पाप का सबब है क्योंकि ऐसे जीव उत्पन्न करना जिनका हम सही तरीके से शिक्षण एवं पालन पोषण भी न कर पाए एक पाप ही है।

विभिन्न पाठ्यक्रमों में भी जन वृद्धि के दुष्परिणाम एवं उन्हें रोकने की व्यवहारिक उपायों की जानकारी दी जानी जरूरी है । यह कार्य केवल सरकारी स्कूलों वह कॉलेजों में ही नहीं अपितु धार्मिक स्कूलों व महाविद्यालय में भी लागू किया जाए ।

साथ ही साथ कम बच्चे पैदा करने वाले लोगों के लिए मुफ्त शिक्षा एवं अन्य सुविधाएं बढ़ाई जानी चाहिए इससे भी एक सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। यदि सरकारों में प्रतिबद्धता हो तो बिजली, पानी जैसी आवश्यक आपूर्ति वाली वस्तुओं की दरें भी एकल परिवारों के सदस्यों की संख्या के आधार पर तय करने में भी कोई बुराई नहीं है ।

जनसंख्या नियंत्रण की ढुलमुल नीति और प्रतिबंधात्मक व नकारात्मक प्रेरणा देते उपायों से हम चीन को पछाड़कर जनसंख्या में सर्वोच्च स्थान पर तो आ गए पर चीन जैसी सख्त जनसंख्या नियंत्रण नीतियां हम कभी भी नहीं अपना सके। हमें जनसंख्या पर नियंत्रण करना ही होगा कैसे भी और किसी भी

तकनीकी से । अब उसके लिए चाहे जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाना पड़े या लोगों में जन जागरण करके एक चेतना लानी पड़े अथवा कुछ और करना पड़े ।

वैसे भारत अभी भी युवाओं का देश है एवं यदि दूरगामी नीति के साथ चला जाए तो इस बढ़ती हुई जनसंख्या का उपयोग देश के विकास के लिए किया जा सकता है । ऐसा माना जाता है कि कम से कम 2054 तक भारत बूढों का देश नहीं होने जा रहा है ।

आज समय की मांग है कि देश की शिक्षा को दक्षता एवं प्रवीणता की शिक्षा बनाया जाए । स्कूलों में किताबी ज्ञान से अधिक तकनीकी एवं उत्पादकता का व्यवहारिक ज्ञान दिया जाए। बच्चों का स्कूल में बिताए जाने वाला कम से कम 50% समय उत्पादक कार्यों में लगाया जाना चाहिए । ज्यादा नहीं तो नवी कक्षा के बाद इस प्रकार की शिक्षा होनी चाहिए कि बच्चे की शिक्षा का आंशिक खर्च उसके द्वारा बनाए गए उत्पादों से निकलना शुरू हो जाए ।

12वीं एवं उसके बाद की शिक्षा के लिए प्रावधान होना चाहिए कि अपनी शिक्षा का खर्च शिक्षार्थी ही अपने उत्पादक कार्यों से पूरा करे। इसके लिए विद्यालय के भवनों को विस्तार देना होगा एवं उन्हें अपडेट करना होगा । हर महा विद्यालय एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय में उत्पादक कक्षों का होना अनिवार्य किया जाना चाहिए जहां बच्चे दक्ष प्रशिक्षकों के निर्देशन में समय की मांग के अनुसार वस्तुओं का उत्पादन करें एवं विद्यालय में एक सेल एंड परचेज जैसा विभाग भी होना चाहिए जो कच्चे माल की आपूर्ति तथा बनाए गए माल की बिक्री की दक्षता पूर्वक व्यवस्था करें ।

जिस तरह निजी महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों को अनुमति दी जा रही हैं उन्हें कड़े मानकों द्वारा नियंत्रित करना बहुत जरूरी है अन्यथा ये संस्थान कागज के टुकड़ों के रूप में डिग्रियां बांटते रहेंगे और भारत का युवा बेरोजगार होकर सड़कों पर घूमता रहेगा । बेशक, जनसंख्या के शिखर पर पहुंचना उपलब्धि नहीं अपितु बहुत बड़ी चुनौती है और इससे निपटने के रास्ते हमें हर हाल में खोजने होंगे।

डॉ घनश्याम बादल

(लेखक जाने-माने स्तंभकार एवं चिंतक है)

महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा की रोकथाम

डॉ शिवा धमेजा

1994 के वियना समझौते और बीजिंग घोषणा और कार्रवाई के लिए मंच, 1995 ने स्वीकार किया है कि घरेलू हिंसा निस्संदेह एक मानव अधिकार मुद्दा है और विकास के लिए गंभीर बाधा है। महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन पर कन्वेंशन पर संयुक्त राष्ट्र समिति ने अपनी सामान्य सिफारिश संख्या XII (1989) में सिफारिश की है कि राज्य दलों को महिलाओं को किसी भी प्रकार की हिंसा से बचाने के लिए कार्य करना चाहिए, विशेष रूप से जो परिवार के भीतर होती है।

घरेलू हिंसा की घटना व्यापक रूप से प्रचलित है लेकिन सार्वजनिक रूप में काफी हद तक अदृश्य बनी हुई है। वर्तमान में, जहां एक महिला अपने पति या उसके रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता के अधीन है, यह भारतीय दंड संहिता, 1860 की धारा 498-ए के तहत एक अपराध है। हालांकि, नागरिक कानून इस घटना को पूरी तरह से संबोधित नहीं करता है।

इसलिए, भारत के संविधान, 1950 के अनुच्छेद 14, 15 और 21 के तहत गारंटीकृत अधिकारों को ध्यान में रखते हुए एक कानून बनाने का प्रस्ताव है, जो नागरिक कानून के तहत एक उपाय प्रदान करता है, जिसका उद्देश्य महिलाओं को घरेलू हिंसा का शिकार होने से बचाना है। हिंसा और समाज में घरेलू हिंसा की घटना को रोकने के लिए।

घरेलू हिंसा विधेयक, 2005 से महिलाओं का संरक्षण 24 अगस्त, 2005 को लोकसभा द्वारा पारित किया गया था और 29 अगस्त, 2005 को राज्य सभा द्वारा 13 सितंबर, 2005 को भारत के राष्ट्रपति की सहमति प्राप्त हुई थी और कानून बन गया था।

घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005 से महिलाओं की सुरक्षा के वर्तमान कानून में निम्नलिखित विशेष विशेषताएं शामिल हैं :

1. इसमें उन महिलाओं को शामिल किया गया है जो दुर्व्यवहार करने वाले के साथ रिश्ते में हैं या रह चुकी हैं

जहां दोनों पक्ष एक साझा घर में एक साथ रहते हैं और सगोत्रता, विवाह या विवाह या गोद लेने की प्रकृति के रिश्ते के माध्यम से संबंधित हैं। इसके अतिरिक्त, संयुक्त परिवार के रूप में

एक साथ रहने वाले परिवार के सदस्यों के संबंध भी शामिल हैं। यहां तक कि वे महिलाएं जो बहनें, विधवाएं, माताएं या अकेली महिला हैं, जो दुर्व्यवहार करने वालों के साथ रह रही हैं, वे भी कानून के तहत कानूनी सुरक्षा की हकदार हैं।

2. यह "घरेलू हिंसा" की अभिव्यक्ति को वास्तविक दुर्व्यवहार या धमकी या शामिल करने के लिए परिभाषित करता है

दुर्व्यवहार जो शारीरिक, यौन, मौखिक, भावनात्मक या आर्थिक है। महिला या उसके रिश्तेदारों से अवैध दहेज की मांग के रूप में उत्पीड़न भी होगा"घरेलू हिंसा" की परिभाषा के अंतर्गत आता है।

3. यह महिलाओं को आवास सुरक्षित करने का अधिकार प्रदान करता है। के लिए भी प्रावधान करता है

एक महिला का अपने वैवाहिक घर या साझा घर में रहने का अधिकार, चाहे उसका ऐसे घर या घर में कोई हक या अधिकार हो या नहीं। यह अधिकार निवास आदेश द्वारा सुरक्षित किया जाता है जो मजिस्ट्रेट द्वारा पारित किया जाता है।

4. यह मजिस्ट्रेट को पीड़ित के पक्ष में संरक्षण आदेश पारित करने का अधिकार देता है, व्यक्ति प्रतिवादी को घरेलू हिंसा का कार्य करने या सहायता करने से रोकने के लिए या कार्यस्थल या किसी अन्य स्थान में प्रवेश करने के किसी अन्य निर्दिष्ट कार्य में पीड़ित व्यक्ति द्वारा उसके साथ संवाद करने का प्रयास करने से रोकने के लिए, दोनों पक्षों द्वारा उपयोग की जाने वाली किसी भी संपत्ति को अलग करना और पीड़ित व्यक्ति, उसके रिश्तेदारों या अन्य लोगों के लिए हिंसा का कारण बनना जो उसे सुरक्षा प्रदान करने में सहायता प्रदान करते हैं |

5. यह सहायता प्रदान करने के लिए सेवा प्रदाताओं के रूप में सुरक्षा अधिकारियों और गैर-सरकारी संगठनों की नियुक्ति का प्रावधान करता है

पीड़ित व्यक्ति का उसकी चिकित्सीय जांच, कानूनी सहायता प्राप्त करने के संबंध में पंजीकरण, सुरक्षित आश्रय आदि। इस प्रकार, घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम, 2005 भारत के संविधान, 1950 के तहत गारंटीकृत महिलाओं के अधिकारों की अधिक प्रभावी सुरक्षा प्रदान करता है, जो परिवार के भीतर होने वाली किसी भी प्रकार की हिंसा की शिकार हैं और उससे जुड़े मामले या उसके आनुषंगिक मामले।

संरक्षण अधिकारियों के कर्तव्य और कार्य.-घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम, 2005 की धारा 9(1) के तहत संरक्षण अधिकारी को निम्नलिखित कर्तव्यों का निर्वहन करना होगा, अर्थात्:

(i) सहायता-उक्त अधिनियम के तहत अपने कार्यों के निर्वहन में मजिस्ट्रेट की सहायता के लिए।

(ii) घरेलू हिंसा की शिकायत प्राप्त होने पर मजिस्ट्रेट को एक घरेलू घटना की रिपोर्ट करने के लिए, इस तरह के रूप में और इस तरह से निर्धारित किया जा सकता है और उसकी प्रतियां स्थानीय पुलिस स्टेशन के प्रभारी पुलिस अधिकारी को अग्रेषित की जा सकती हैं। उनके अधिकार क्षेत्र की सीमाएं जहां कथित तौर पर घरेलू हिंसा की गई है।

(iii) आवेदन दाखिल करना- यदि पीड़ित व्यक्ति सुरक्षा आदेश जारी करने के लिए राहत का दावा करना चाहता है तो मजिस्ट्रेट को ऐसे फॉर्म में और इस तरह से निर्धारित तरीके से आवेदन करने के लिए आवेदन करना।

(iv) कानूनी सहायता प्रदान करना-यह सुनिश्चित करने के लिए कि पीड़ित व्यक्ति को विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987 के तहत कानूनी सहायता प्रदान की जाती है और निर्धारित प्रपत्र जिसमें शिकायत की जानी है, उसे निःशुल्क उपलब्ध कराया जाता है।

(v) मजिस्ट्रेट के अधिकार क्षेत्र के भीतर एक स्थानीय क्षेत्र में कानूनी सहायता या परामर्श आश्रय गृह और चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने वाले सभी सेवा प्रदाताओं की सूची बनाए रखने के लिए सेवा प्रदाताओं की सूची बनाए रखना।

(vi) आश्रय गृह की उपलब्धता सुनिश्चित करना - यदि पीड़ित व्यक्ति को आवश्यकता हो तो एक सुरक्षित आश्रय गृह उपलब्ध कराने के लिए और पीड़ित व्यक्ति को आश्रय गृह में रखने की अपनी रिपोर्ट की एक प्रति पुलिस स्टेशन और क्षेत्राधिकार वाले मजिस्ट्रेट को अग्रेषित करना। वह क्षेत्र जहां आश्रय गृह स्थित है।

(vii) चिकित्सा परीक्षण-पीड़ित व्यक्ति की चिकित्सीय जांच कराने के लिए, यदि उसे शारीरिक चोटें लगी हैं, तो चिकित्सा रिपोर्ट की एक प्रति उस पुलिस स्टेशन और मजिस्ट्रेट को अग्रेषित करें, जिसके अधिकार क्षेत्र में घरेलू हिंसा का आरोप लगाया गया है।

हालांकि, घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005 से महिलाओं की सुरक्षा की धारा 9(2) यह स्पष्ट करती है कि अधिनियम के तहत नियुक्त संरक्षण अधिकारी मजिस्ट्रेट के नियंत्रण और पर्यवेक्षण के अधीन होंगे और मजिस्ट्रेट द्वारा उन्हें सौंपे गए कर्तव्यों का पालन करेंगे और अधिनियम के तहत सरकार द्वारा।

हमारी कालजयी संस्कृति

डॉ आर बी भण्डारकर

संक्रांति काल में यह चिंता व्यक्त की जाती है कि हमारी संस्कृति संकट में है।यह केवल आज की बात नहीं है, पहले भी समय समय पर यह चिंता प्रकट की जाती रही है।

बाहर से कई धर्मों का आगमन हुआ,कई जातियों(नस्लों)का।स्वाभाविक रूप से उनके साथ उनकी अपनी संस्कृतियाँ आईं।इनका हमारी संस्कृति पर कुछ प्रभाव अवश्य पड़ा पर हमारी संस्कृति के मूल भाव अक्षुण्ण रहे।

वस्तुतः भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृतियों में से एक है।भारतीय संस्कृति में मानव जीवन के सही विकास के लिए आश्रम - व्यवस्था के साथ ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे चार पुरुषार्थों को जीवन के अंग के रूप में स्वीकार किया गया है।यह भी कि भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता और भौतिकता का अदभुत समन्वय है, यहाँ इन्हें एक दूसरे का विरोधी न मानकर परस्पर पूरक की तरह लिया गया है।

हमारी संस्कृति के उदारता,ग्रहण शीलता और समन्वय जैसे अद्भुत गुण अन्यत्र कम ही देखने को मिलते हैं।वसुधैव कुटुम्बकम जैसे भाव केवल हमारा ही चिंतन है।सहिष्णुता और समन्वय भाव के कारण ही हमने अनेक संस्कृतियों के उच्च भावों को आत्मसात कर लिया है।

हमारी संस्कृति में जीव मात्र के कल्याण का भाव है-

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्।"

मिलजुल कर रहने,कार्य करने और आगे बढ़ने के भाव को हमारी संस्कृति में अहम स्थान दिया गया है-

"ॐ सह नाववतु,सह नौ भुनक्तु,सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै।"

अपवाद को छोड़ दें तो आमतौर पर व्यक्ति फल की लालसा में ही कार्य करता है पर हमारी संस्कृति में कर्मयोगी कृष्ण का संदेश जीवन मंत्र के रूप में रचा,बसा है-

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।"

ऐसे ही अनेक विशिष्ट तत्त्व हैं जिनसे कि हमारी संस्कृति हमारी आत्मा में ऐसी रची बसी है कि

"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।"

तभी तो हम सभी आशंकाओं, कुशंकाओं को निर्मूल करते हुए दम भर कर कहते हैं-

"कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन, दौर-ए-ज़माँ हमारा।"(इकबाल)

लेकिन हमें जाग्रत तो रहना ही है ताकि भविष्य में भी हम तमाम झंझावात झेल कर भी अनंत काल तक प्राणी मात्र की हितकारी अपनी संस्कृति का अस्तित्व कायम रखे रहने में समर्थ बने रहें।

अथ पर देखा है

गिरेंद्र भदोरिया प्राण

जिनके मुख पर धाय खोल कर छाती कभी खड़ी थी।
पैदा होते ही चाँदी की चम्मच रही पड़ी थी।।
बरसी तो दिन रात खजानों से थम नहीं रही थी।
जिनकी धन सम्पदा कुबेरों से कम नहीं रही थी।
उनको मैंने भीख माँगते पथ पर देखा है।
आते जाते उनकी इति को अथ पर देखा है।।

जूठी पड़ी पत्तलों पर जंगली श्वान लड़ते हैं।
उनमें एक निवाले को शिशु लगा जान भिड़ते हैं।।
भीख मांँगते तन ढँकने तक के न वसन मिल पाए।
समय चक्र घूमा जब उनका तभी उदर भर पाए।।
उन भिखमंगों तक को बैठे रथ पर देखा है।
आते जाते उनकी इति को अथ पर देखा है।।

इतराते बलखाते चलते गुर्राते गर्राते।
जग को पग की धूल समझते धरती को थर्राते।।
बड़े बड़े शूरमा शरण में चरण चूमते देखे।
जिनके "प्राण" बचाते खुद यम दूत घूमते देखे।।
उनके तन को रक्त धार से लथ - पथ देखा है।
आते जाते उनकी इति को अथ पर देखा है।।

इति = समापन
अथ = प्रारम्भ

नन्हीं चिड़िया

प्रिया देवांगन

भटक रहे हैं हम बेचारे, कहाँ कहाँ अब जायेंगे।
जरा बताओ हमको मानव, कैसे प्यास बुझायेंगे।।
सूरज दादा नहीं समझते, नीर सभी पी जाते हैं।
ग्रीष्म काल की इस बेला में, हर दिन वे तरसाते हैं।।

नीर भरे नयनों से कोयल, कू कू गीत सुनाती है।
मैना अरु गौरैया रानी, आकर गले लगाती हैं।।
चिंता में पक्षी हैं डूबे, कोई नीर पिलाओ ना।
तड़प तड़प कर मर जायेंगे, मेघ धरा में आओ ना।।

वृक्ष लतायें ठूँठ पड़े हैं, गर्म हवाएँ बहती हैं।
पीर हमारी देख धरा भी, सहमी सहमी रहती है।।
कोयल कहती गौरैया से, शांत रहो छोटी बहना।
हम मानव के घर जायेंगे, व्यथा हमारी तुम कहना।।

साहस भर कर जाते पक्षी, पीड़ा उन्हें सुनाते हैं।
कानन-वन की सारी बातें, चूँ चूँ वे बतलाते हैं।।
हाथ जोड़ते विनती करते, थोड़ा सा रख दो पानी।
प्यास बुझा कर उड़ जायेंगे, हम नन्हीं चिड़िया रानी।।

जा रहा हूँ बाबू जी

डॉ उमेश प्रताप वत्स

कर्मभूमि को छोड़कर मैं जा रहा हूँ बाबू जी
न चाहते निज धाम को अब जा रहा हूँ बाबू जी
बड़ी उम्मीदें लेकर मैं आया था प्रदेश में
भंडार निराशा का लेकर जा रहा हूँ बाबू जी
जीवन यापन को मिला सदा सहारा आपका
एहसान बहुत से आपके रह गये हम पर बाबू जी
भूला नहीं वो रात मैं थी बिटिया पीड़ित बुखार से
अस्पताल में ले गये आप मसीहा बने तब बाबू जी
रोटी कपड़ा छत मिली प्यार मिला था आपका
थे बच्चें भी पढ़ने लगे हुई कृपा आपकी बाबू जी
किन्तु तस्वीर बदल गई कोरोना के भयानक वार से
आपने मुंह मोड़ लिया किधर जाये अब बाबू जी
महामारी का भय बड़ा बाकि सब हल्का रहा
तीस साल की सेवा-श्रम विस्मृत हो गई बाबू जी
थी बीवी भी नाचती इशारे पर ठुकराइन के
काम किया था रात दिन घर समझ के बाबू जी
खो गये वो तीस वर्ष ढूँढ रहा हूँ अपनापन
बिखर गए मोती सभी भये बेगाने बाबू जी
बढ़ता जब निज गाम को हवा रोकती बढ़ने से
भारी कदम उठा बढ़ू अनमना सा बाबू जी
एकबार तो कह देते कैसे जाओगे बच्चों संग
रहता पड़ा कहीं कोने में न जाता छोड़ के बाबू जी
ये रिश्ते भी क्या अजीब है स्वार्थ से सने हुये
मिटी सब संवेदना हम भी भूल जायेंगे बाबू जी

कौन भरेगा हुंकार

डॉ उमेश प्रताप वत्स

बारूद के भंडार हैं जग में , फिर ये कैसा अहंकार,
बाढ़ खेत को निगलेगी तो, फिर कौन भरेगा हुंकार।
जिसका लक्ष्य शांति स्थापना, जो विकसित राष्ट्र माने जाते,
छोटे देशों की करें सुरक्षा, भागीदार हो अपनाते,
यदि वहीं आक्रमणकारी हो जाये, तुच्छ देश कहां जाएंगे ,
मांझी जो नाव डुबोयेंगे तो, फिर किनारे कौन लगाएंगे।
मानवता की बात करो, मत बढ़ाओ यह अहंकार,
बाढ़ खेत को निगलेगी तो, फिर कौन भरेगा हुंकार।
महामारी से लड़ने हेतु, सब एक साथ आ जाते हैं,
प्राकृतिक आपदाओं में भी, मिलकर साथ निभाते हैं,
फिर विस्तारवादी होकर, क्यूँ सीमा पर लड़ते हम,
छोड़ संवाद मैदाने जंग में, क्यूँ दिखाते अपना दम।
अतिक्रमण की नीति छोड़ों, मत करो सीमा विस्तार,
बाढ़ खेत को निगलेगी तो, फिर कौन भरेगा हुंकार।
मानव का मानव से नाता, मिल-बाँटकर प्यार से खाता,
सबसे बोलें मीठे बोल, परोपकार कर खुश हो जाता,
ऐसा सब देशों में हो तो, रामराज्य आ जाएगा ,
बारूद-मिसाइल की जगह, वट-वृक्ष लहराएगा,
क्यूँ बात-बात पर झगड़ा होता, हर बात का तिरस्कार,
बाढ़ खेत को निगलेगी तो, फिर कौन भरेगा हुंकार।

अनुभव

बृजेश कुमार

जीवन है इक पथ
, का अनुभव -
जो चलता है सो
पाता है ,
जहाँ संघर्ष का जीवन
होता है ,
उन्नति को वह
छू जाता है ,
ज़ब ठोकर लगती
है उसको ,
अनुभव को वह
पा जाता है ,
जीवन की अनुपम धारा में ,
जहाँ प्रेम सदा
रहता होगा ,
मंगलमय जीवन ही होगा ,
मन तनिक भी
व्याकुल न होगा ,

जीवन का एक ...
सुन्दर सपना ,
साकार नज़र
सा आता है ,
वाणी में संयम होता है ,

दुःख में भी न
घबराता है ,
जीवन है एक अमूल्य रत्न ,
जो माता पिता से पाया है ,
इनकी सेवा का अवसर ,
हर किसी को नहीं
मिल पाता है ,
जिसने चलना ना
सीखा हो ,
वह दर दर ठोकर ,
खाता है ,
वह अपमान की
अग्नि में ,
पल पल जलता -
जाता है

कलम, आज उनकी जय बोल।

रामधारी सिंह दिनकर

जला अस्थियां बारी-बारी,
चटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर,
लिए बिना गर्दन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

जो अगणित लघु दीप हमारे,
तूफ़ानों में एक किनारे,
जल-जलाकर बुझ गए किसी दिन,
मांगा नहीं स्नेह मुंह खोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

पीकर जिनकी लाल शिखाएं,
उगल रही सौ लपट दिशाएं,
जिनके सिंहनाद से सहमी,
धरती रही अभी तक डोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

अंधा चकाचौंध का मारा,
क्या जाने इतिहास बेचारा,
साखी हैं उनकी महिमा के,
सूर्य चन्द्र भूगोल खगोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

कहानी

कुटुम्ब दावत

श्यामल बिहारी महतो

फूफा फूलचंद की फुफकार और ललकार से ही गजोधर बाबू की इज्जत - आबरू बची ! राहत मिली थी ! वरना आज तो गोतिया भाईयों ने भरी समाज में उसकी दो गज धोती खोलवाने का पूरा पूरा इंतजाम कर रखा था । मतलब कि धोती खूलन से बाल-बाल बच गया था गजोधर बाबू.. निर्धारित समय पर हम शाम को " कुटुम्ब भोज " पार्टी में पहुंच गए थे । उसके पहले ही गजोधर के घर में हंगामा शुरू हो गया था और अब भी यहां मछली बाज़ार सा माहौल बना हुआ था । शांति पूर्वक " कुटुम्ब भोज " पार्टी सम्पन्न कराने के गजोधर बाबू के सारे किए कराए तैयारी पर उनके गोतिया भाईयों ने मांड बहाने की तैयारी कर रखा था ...!

शादी कल ही सम्पन्न हो चुकी थी । घर में बहू भी आ चुकी थी । इसी खुशी में आज गजोधर ने " कुटुम्ब भोज " पार्टी का आयोजन किया था । उसके सारे हित-मित्र आ रहे थे ।

हम भी सपरिवार आमंत्रित थे " शाम सात बजे से आपके आने तक " शादी कार्ड में उल्लेख था । सुबह में ही घर में सभी ने जाने का मन बना लिए थे । दोनों बच्चे कुछ ज्यादा ही उत्साहित थे । अलबत्ता पत्नी का मूड बच्चों से मेल नहीं खा रहा था । बूफे पार्टी में कभी गई नहीं थी । सो उसके मन में कई सवाल थे । और मेरे पास उसके किसी सवाल का जवाब नहीं था ।

मैं आफिस के लिए निकल रहा था कि तभी सामने आकर पत्नी ने सवाल दाग दिया-"यह बूफे सिस्टम कैसा होता है ? सुनकर ही दोनों बच्चे बहुत खुश हैं और जाने के लिए अभी से ही ऊधम मचा रहे हैं ! "

पहले तो प्यार से मैंने पत्नी के कंधे पर हाथ रखा और दुलार से कहा- " देखो, बताने से तुम नहीं समझ पाओगी, मै भी इस तरह के खान पान में आज तक शामिल नहीं हुआ हूं । हां सुना जरूर हूं । देखते है न, कैसा होता है,शाम को सब तैयार रहना...!"कहता हुआ मैं घर से निकल पड़ा था ।

रास्ते में मुझे पुराने दिन याद आ गये । आपको भी याद होगा । आज से दस बारह साल पहले विवाह-भोज में लोग जमीन पर पांत लगा कर एक साथ बैठकर सखुआ पतल पर मज़े से भोजन करते थे । मजे की बात तो यह होती थी कि जब तक पूरी पांत के पतरों पर खाना पूरा पूरा

परोसा नहीं जाता था, पूड़ी का एक टुकडा या भात का एक कोर भी कोई मुंह में नहीं डालते थे " हां शुरू किया जाए....?" कोई कहता

" हां, हां शुरू किया जाए...!" इस तरह के जवाब के साथ लोग खाना शुरू करते थे । लोग भर पेट खाते फिर -" उठा जाए, हाथ धोया जाए..कि और किसी को कुछ लेना है ?" उठने से पहले फिर कोई पूछता था ।

" नहीं.नहीं . हो गया...!" पांत के बीच से ही कोई जवाब देता ।

" हां, हां, उठा जाए, एक एक करके धोया जाए...!" यह खाने के बाद का सामूहिक स्वर होता था । कैसा अपनापन कैसा भाई चारा हुआ करता था तब ! भाई-चारे की डोर से सब एक दूसरे से बंधे होते थे । खाने में किसी चीज की कोई कमी होती तो कोई शिकवा शिकायत नहीं -" अरे नहीं जुटा पाया होगा ..!" कहते हुए लोग निकल लेते ! राग-रूस नहीं करते थे ! लोग खाते कम परन्तु भाई चारा की पुडियों से सबका पेट भरा रहता था...!

इसी के साथ मुझे दोस्त रमेश की बात भी याद आ गई । वह अपने एक दोस्त के घर की बहू भात (बूफे पार्टी) की आपबीती सुनाते हुए एक दिन कह रहा था -" आज कल खाने में कितनी भी वेराइटी बढ़वा दो, लेकिन लोगों को खोट निकालने में जरा भी देर नहीं लगता-" क्या बोलूं यार, खाने का अरेंजमेंट खूब किया था पर मीट ठीक से गला नहीं था, दांत से खींचना पड़ता था- शायद बूढ़ा खस्सी था...!" एक बोला

" मैंने केटरर्स से बोला दो पीस और डाल दो- डाला नहीं,शायद उसे बोल रखा गया हो" दो से ज्यादा देना नहीं..!" अब इतना दूर से सिर्फ दो पीस मीट खाने आएं ..!" दूसरा बोला

" क्या कहूं यार ! मेरा तो मन ही खिन्न हो उठा..!"

" क्यों, क्या हो गया..?"

" वो रतन लाल,प्लेट लेकर मेरे सामने ही आकर खाने लगा था । पीछे से किसी ने उसे धक्का दे दिया, उसके प्लेट का सारा खाना छिलक आकर मेरे शर्ट पर गिर गया - देखो ! खड़े होकर खाना मतलब ऊंट की तरह खाना है । स्याला गुस्सा तो इतना आया कि मन किया अपना प्लेट रतन पर फेंक दूं । परन्तु मन मार कर रह जाना पड़ा । उसका क्या दोष ? - दोष इस तरह के आर्गनाइज का है! सवारी गाड़ी में जैसे सब ठूसा- ठूंसी होते है, एक दूसरे पर सवार होने के लिए ,उसी तरह यह बूफे सिस्टम है - पहले प्लेट हथियाओ फिर खाने के लिए लाइन में खड़े हो जाओ- सिनेमा के टिकट लेने जैसा, फिर धीरे धीरे आगे बढ़ते जाओ, पेट में खाना जाने से पहले भीखमंगों सी फिलिंग आ जाती है । मैं जल्दी से जाकर पानी से शर्ट को धोया पर दाग पूरी तरह गया नहीं-क्लीनर में देना होगा- स्याले बूफे की ऐसी तैसी..!" तीसरे की थोथी...! आफिस

में काम ज्यादा कुछ था नहीं । एक सालाना मांग पत्र बनाया और घर वापस आ गया था । बच्चे जाने को तैयार थे । मैं फ्रेस हुआ । कपड़े बदले और शाम को सपरिवार निकल पड़े थे । उधर जैसे ही रसोईया ने गजोधर बाबू को सूचना दी " खाना तैयार है " ।

वैसे ही गजोधर बाबू गोतिया भाईयों को बुलाने सीधे उनके घर जा पहुंचा था । गोतिया भाईयों ने उसे हाथों-हाथ लिया जैसे इसी घड़ी के इंतजार में अपने अपने घरों के बाहर वे सभी बैठे हुए थे । जहां एक- एक करके सबने गजोधर बाबू को लताड़ने शुरू कर दिए । शुरुआत उसके बडका जेठा ने खैनी थूक कर किया " गजोधर बाबू, हमें मालूम है, तुम बडका आदमी बन गया है, शानदार मकान भी बना लिया है,चार चक्का वाला गाड़ी भी खरीद लिया है,बोड-बोड लोगों के संग तुम्हरा उठना बैठना होता है, बड़ी बड़ी पार्टियों में खाने जाता है,नित-नोतन चीज देखता-सुनता है,हम तो कुंआ के बेंग (मेंढक) ठहरे..!"जेठा ने बचा खुचा खैनी थूका और फिर चालू हो गया- " लेकिन सुन लो गजोधर बाबू, हम कुंए के बेंग जरूर है लेकिन भीखमंगा नहीं है और न हम तुम्हरा घर जाकर हाथ में पलेट लेकर खाने के लिए भीख मांगते-" दो भाई, दो भाई..!" कहते फिरेंगे,जाओ घर जाओ और घर आये अपने मेहमानों को खिलाओ जैसे वो तुम्हें खिलाते हैं...!"

" हम छोटे आदमी जरूर है लेकिन अपनी मान मर्यादा हमें मालूम है..।" मंझिला जेठा ने जोड़ा था- "

" सिर्फ अधिक पैसा कमा लेने से कोई बड़का आदमी नहीं बन जाता, गुण-संस्कार पैसों से नहीं कमाया जा सकता है, वह तो अपनी बिरादरी, अपने समाज में बैठने-उठने से मुफ्त मिल जाता है । लेकिन तुम तो समाज को छोड़ चुका है । अपनी लोक- लोकाचारी भूल चुका है , बड़ा आदमी बन चुका है । "

" चार पैसा कमा क्या लिया, चला है हमें बाहरी तड़क भड़क दिखाने- सीखाने,बाप -दादाओं, आजा-पुरखों की संस्कृति को भूलाने वाले को गोतिया बिरादरी से बाहर निकालो..." बहुत कम बोलने वाले बड़का जेठा का बड़ा बेटा रघुनाथ का गुस्सा एक दम चरम पर पहुंच गया था ।

गजोधर बाबू ! काटो तो खून नहीं वाली स्थिति में घिर चुका था । उसकी इच्छा, उसके सपने, समाज में बदलाव वाली उसकी सोच को जैसे लकवा मार दिया था । मुंह से बोल नहीं निकल पा रहा था । हकाबका कभी बड़का जेठा को देखता तो कभी उसके बड़े बेटे को जिसने अभी अभी एक चेतावनी दे डाली थी- " निकाल इसे गोतिया बिरादरी से, बूफे सिस्टम से बहू भात का आयोजन करेंगे-किसी से पूछा- नहीं पूछा न ,अभी आया है अपनी हेकड़ी दिखाने-खाना खिलाने नहीं...!"

शोर और भीड़ पंडाल से निकल कर गली में आ गया था । खाना शुरू होने के पहले गोतिया बिरादरी ने बंद का नोटिस लगा दिया था । गोतिया भाईयों के बीच गजोधर गूंगा बन चुका था । तभी उसके फूफा फूलचंद महतो पहुंचा था वहां पर । आगे बढ़ कर गजोधर बाबू ने फूफा का पैर छूकर प्रणाम किया-" गोड लागी फूफा ..।"

" सदा खुश रहो भतीज..।" फूलचंद ने गजोधर बाबू के सर पे हाथ रखा फिर बोला -" अरे भाई, सारे लोग यहां इकठ्ठा हो गये हैं, वहां पूरा का पूरा पंडाल खाली है । खिलाने वाले खाली हाथ पकड़े खड़े , आखिर माजरा क्या -गजोधर बाबू ?" फूलचंद फूल स्पीड से सीधे पंडाल से भागे चले आ रहे थे ।

" हाथ में प्लेट लेकर भीख मांग कर खड़े खड़े खाना होगा-फूफा..!" रघुनाथ गुस्से में ही बखेड़े का कारण बताना चाहा था ।

" मतलब नहीं समझा मैं..?" फूलचंद ने गजोधर बाबू की तरफ देखा । गजोधर बाबू मुंह खोलता उसके पहले मंझिला जेठा ने कहना शुरू कर दिया-"

" मतलब साफ है बहनोई , हम सबने फैसला किया है बूफे सिस्टम के तहत हाथ में प्लेट लेकर भीख मांगते हुए हम खाना नहीं खायेंगे । गजोधर बाबू ने बूफे सिस्टम आयोजन कर रखा है वो हमें मंजूर नहीं है । ज़मीन पर बैठ कर पांत लगाकर आज तक खाते आये हैं, वैसे ही खायेंगे..!"

" खाना कब शुरू होगा बाबू जी, जोरों की भूख लगी है..!" बेटी पिंकी को भूख बर्दाश्त नहीं हो रही थी ।

शोर गुल से पत्नी भी परेशान होने लगी थी । मामला भी शांत नहीं हो रहा था । आकर बिना खाए लौट जाना भी ठीक नहीं था । आकर बुरे फंसे थे हम । हम क्या, ढेरों लोग खाने के इंतजार में पंडाल के भीतर इधर उधर टहल रहे थे ।

" अच्छा तो यह बात है ! " फूलचंद ने मामले को फूल की तरह सूंघ लिया फिर बोलना शुरू किया था-" आप लोग एक बात बताइए, पहले हमारी बारात बैल गाड़ियों के साथ निकलती थी, आज बोलोरो-स्कॉरपियो में निकलती है-निकलती है न ...?"

फूलचंद ने भीड़ से पूछा ।

" हां निकलती है...!" किसी ने कहा

" बहुतों को याद होगा, बारात निकलने के दो चार दिन पहले गाड़ीवान को डबल सुपारी दी जाती थी बारात जाने की । तब से ही वह बैल और गाड़ी को सजाना शुरू कर देता था । जैसे आज दुल्हे वाली गाड़ी को सजवाते है हम । उसी तरह उन दिनों बैलगाड़ियों को खूब सजाया जाता था । घांटी- घुंघरूओं से सजे बैलगाड़ियों के साथ जब किसी की बारात निकलती थी तो लगता

किसी नसीब वाले की बारात निकली है । हम बैलगाड़ी से स्कॉरपियो में आ गए तब तो हमें कोई दिक्कत नहीं हुईफूलचंद फूल स्पीड में जारी थ "कोई एतराज़ नहीं हुआ । किसी को ,ा "- पहले हम सौ आदमियों को निमंत्रण भेजते तो दस आते थे और पांत लगाकर बैठ कर खाते और जाते थे । न जगह की कमीमन मुताबिक खाकर खुशी खुशी जाते थे । ,न खाने की कमी, सौ ,आज स्थिति उलट हैआदमियों को निमंत्रण कार्ड भेजोपांच सौ पहुंच जाते हैं । बैठा कर , खिलाने के लिए फूटबॉल मैदान भी कम पड़ जाएगा । खाने में कुछ घटना बढ़ना तो स्वभाविक है । खान पान में बदलाव लाकर ही इस स्थिति से बचा जा सकता है । समय के साथ हर चीज पहन ,पान-में बदलाव आता है । खानावासभी में । बदलाव भी षाभू-वेष ,गान-नाच ,ओढावा-ढिबरी युग से निकल कर बिजली युग में आते आते कितने बदलाव हुए । आज जरूरी है । कोई धोती कमीज ,लड़कियां जीन्स पैंट पहनने लगी है लड़के के पहनावे आप सब देख ही रहे हैं टाई-कोर्ट-शर्ट पैंट ,पहन शादी करना नहीं चाहतेचाहिएजावा गीत -करम बेटियां-। आज की बहन -नहीं जानतीडी जे की धून में जींस पहन कर नाचती हैं ।करम आखरा में ढोलमांदर की जगह - क्या किसी ने इस ? तब आपको पुरखों की संस्कृति की याद नहीं आती है ,अब डी जे बजता है यह बदलाव का दौर ह ? नहीं न-बदलते मिजाज को रोक पायाै । इस दौर में हमारे हाथ से बहुत कुछ छूट रहा है । नयानया बहुत- कुछ जूड रहा है ।पुराने ख्यालात को भी छोड़ना होगा बहुत !.. उसे समय बदल देता है ,। बेकार की ज़िद्द छोड़िए । जो समय के साथ नहीं बदलता है समय हो चुका है अब खाने में विलम्ब नहीं करना चाहिए क्या कहते हैं आप लोग"!...

गजोधर बाबू के बड़का जेठा का छोटा बेटा राजेश "!..फूफा की बात का समर्थन करते है हम " हम सब " सामने आ गया । ताली बजा कर सभी ने फूलचंद महतो की बातों का समर्थन किए भीड़ से आवाज आई । रघुनाथ अबकी चुपचाप खड़ा था । "!..आपकी बातों से सहमत हैं गजोधर बाबू ने बुद्धिमानी से काम लिया और बड़का जेठा के सामने हाथ जोड़ खड़ा हो गया । बोला बेटे से कुछ गलती हो गई है ,आप ही हमारे बाप है ,आप जिंदा हो,मेरा बाप मर चुका है "- तो माफ़ कर दो औरचलिए खाना खाने की शुरुआत कर दीजिए, आप नहीं जाएंगे तो कोई नहीं खाएगाभूखे , कब से सभी खड़े हैं । "

बड़का जेठा को जो मान सम्मान मिलना चाहिएचलो खाने की (जेठा) गुंगू " वह उसे मिला, "!. शुरुआत कर दोयह पूर्वजों वाली इज्जत था ।

बड़का जेठा खड़ा होते ही रो पड़ा और गजोधर बाबू को गले लगा लिया फिर बोल पड़ापगले " - ज) तुमने आज अपने गुंगूेठा आंख "!...बहू भात खाते है - भाईयों चलो ! को रूला दिया न(पोछते वह आगे बढ़गये थे । इसी के साथ सब।...पंडाल की ओर चल पड़े थे

बड़का जेठा रूठा था " ,बकरे की मूंडी वास्ते " मिली (पैर)बकरे की गोडी -

घर पहुंच कर पत्नी ने कहाखड़े होकर खाने में बड़ी शर्म लग "- रही थी"!..

गहना होता है । पेटीकोट के नीचे पहली बार जब तुमने पेंटी - शर्माना मनुष्यों का फैशन नहीं "-

"!...याद है-पहनी थी तब कितनी शर्माई थी

"!.. वह तो मैं तुम्हारी बातों में आ गई थी "

कोई किसी की बातों में आ जाता ह ,जीवन में इसी तरह बदलाव होते रहते हैं "ै कोई किसी की ,

"!..जीवन इसी तरह चलता रहता है ,बातों में आ जाती है

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की भतीजी बेलूर के जमींदार नारायण राव की पुत्री महारानी तपस्विनी

याद करो तुम सन सत्तावन की उस भीषण चिंगारी को।
गोरे भी कायल थे जिसके उस तलवार दुधारी को,
दुर्गा सम थी वो समरभूमि में तपस्विनी नाम था।
शूरवीरता देख के जिसकी दुश्मन भी हैरान था।

भारतीय वांग्मय में जननी जन्मभूमि को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ बताया गया है भगवान श्रीराम ने अवध को स्वर्ग से उच्च स्थान पर माना | भारत के इतिहास में जिन महान विभूतियों ने अपने जीवन को मातृभूमि की रक्षा के लिए न्यौछावर कर दिया, महारानी तपस्विनी उनमें से एक थीं | अपनी अंतिम सांस तक उन्होंने अंग्रेजों का विरोध किया ब्रिटिश सरकार का विरोध किया | अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति में महारानी तपस्वीनी का योगदान अविस्मरणीय है |

महारानी तपस्विनी - जीवन परिचय

भारत की स्वतंत्रता सेनानी महारानी की तपस्विनी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की भतीजी थीं | सरदार पेशवा नारायण राव की इस पुत्री का बचपन में नाम सुनंदा था | वे बाल विधवा थी लेकिन विधवा होने के बावजूद भी वे निराशापूर्ण जीवन व्यतीत नहीं करती थी | वे अपनी वीरता के लिए जगह जगह विख्यात थीं | उन्हें माताजी के नाम से भी जाना जाता था |

बाल्यावस्था से ही उनके मन में राष्ट्रप्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी | वे ईश्वर की सच्ची उपासक थीं | अपने दैनिक जीवन में शस्त्र और शास्त्रों का अभ्यास अवश्य करतीं थीं | शास्त्रों के अध्ययन ने उनके व्यक्तित्व को गांभिर्यता प्रदान की एवं शस्त्रों के अध्ययन ने उन्हें साहस की प्रतिमूर्ति बना दिया |

उनके चेहरे पर अद्भुत तेज़ दमकता था | उन के हृदय में देश की आजादी की ललक के सिवाय कुछ नहीं था | जिस प्रकार शेर कभी हाथियों से डरता नहीं है सुनंदा भी अंग्रेजों से नहीं डरती थी |

भारतीय प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857

भारतीयों में ज़ब अंग्रेजों की दासता से मुक्ति की ललक उत्पन्न हुईं तो पहला प्रयास 1857 की क्रांति के साथ किया गया | इस क्रान्ति में न केवल क्रांतिकारियों ने भाग दिया भारत की जनता ने भी खुलकर भाग लिया

1857 की क्रांति जनमानस का विद्रोह था | मातृभूमि के लिए असंख्य लोगों ने भयंकर यातनाएं सहीं किन्तु विचलित हुए बिना मातृभूमि की रक्षा में प्राणों की आहुति दे दी |

अपने पिता पेशवा नारायण राव की मृत्यु के बाद सुनंदा ने स्वयं शासन की बागडोर संभाल लीं | उन्होंने कुछ सिपाही भर्ती किये | | सुनंदा जन - जन को अंग्रेजों के विरुद्ध भड़काती एवं निरंतर क्रान्ति की प्रेरणा देती रहतीं थीं |

अंग्रेजी सरकार तक सुनंदा की इस गतिविधि का पता चला तो उन्होंने सुनंदा को एक किले में नज़रबंद कर दिया | अंग्रेजी सरकार सोचती थीं कि एक महिला उनकी इस कार्यवाही से शांत होकर बैठ जाएगी किन्तु ऐसा नहीं हुआ |

रानी सुनंदा कैसे बनी महारानी तपस्विनी –

ज़ब अंग्रेजी सरकार ने सुनंदा को रिहा किया तो वे घर ना जाकर नेमिषारन्य तीर्थ स्थान पर चली गई | वहाँ संत गौरी शंकर के निर्देशन में शिव और शक्ति की उपासना में तल्लीन हो गयीं | अंग्रेजी सरकार ने उनकी इस बात से यह अनुमान लगा लिया की सुनंदा अब संन्यासी बन गयीं हैं | अंग्रेजों को उनसे अब कोई भय नहीं |

यहाँ के लोग सुनंदा को तपस्विनी के नाम से सम्बोधित करने लगे | वे प्रवचन देती थीं | छोटे बड़े प्रत्येक वर्ग के लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान देतीं थीं | वे अपने प्रवचनों के माध्यम से जनता में क्रांति के सन्देश फैलाती थीं | रानी तपस्विनी जनता को क्रान्ति करने की और अंग्रेजी सरकार से विद्रोह करने की प्रेरणा देतीं थीं | रानी के शिष्य साधु रूप में प्रचार करते और कहते थे कि " अंग्रेज न सिर्फ तुम्हारे देश को हड़प लेंगें बल्कि तुम्हारा धर्म भी भ्रष्ट कर लेंगें, तुम्हें ईसाई बना लेंगें | तुम जागो, उठो ¡ अंग्रेजों को देश से निकालने के लिए तैयार हो जाओ " |

1857 की क्रांति में रानी तपस्विनी का योगदान

ज़ब 1857 की क्रांति का बिगुल बजा, तब रानी तपस्विनी ने इस क्रांति में सक्रिय रूप से भाग लिया | उनके प्रभाव के कारण अनेक लोगों ने इस क्रांति में अहम भूमिका निभाई | रानी ने स्वय घोड़े पर चढ़कर युद्ध में भाग लिया | परंतु उनकी छोटी सी सेना थी, वह अंग्रेजों की विशाल तथा संगठित सेना के समक्ष अधिक समय तक टिक नहीं सकी | इसके अतिरिक्त कुछ भारतीय गद्दारों ने भी उन के साथ विश्वासघात कर दिया था | अंग्रेजी सरकार ने रानी को पकड़ने के लिए कई बार कोशिश की | परंतु गांव वालों की पूरी मदद से, ब्रिटिश सरकार को अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त नहीं हुई |

रानी तपस्विनी ने यह महसूस कर लिया था की युद्ध के माध्यम से अंग्रेजों को पराजित करना आसान कार्य नहीं है | 1857 की क्रांति की विफलता के बाद उन्हें तिरुचिरापल्ली की जेल में रखा गया। बाद में वे नाना साहेब के साथ नेपाल चली गईं, जहां उन्होंने नाम बदलकर काम शुरू किया। नेपाल पहुंचकर माताजी ने वहां बसे भारतीयों में देशभक्ति की भावना की अलख जगाई। नेपाल के प्रधान सेनापति चन्द्र शमशेर जंग की मदद से उन्होंने गोला-बारूद व विस्फोटक हथियार बनाने की एक फैक्टरी खोली ताकि क्रांतिकारीयों की मदद की जा सके। लेकिन सहयोगी खांडेकर के एक मित्र ने धन के प्रलोभन में आकर अंग्रेजों को तपस्विनी के बारे में सब कुछ बता दिया। तब तपस्विनी नेपाल छोड़कर कलकत्ता चली गईं।

लेकिन वहां जाकर भी रानी शांति से नहीं बैठी | रानी ने वहां अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया | वहां से छिपे रूप में भारतीयों को क्रांति का संदेश भिजवाती थी | और उन्हें विश्वास दिलाती थी कि घबराए नहीं, एक दिन अंग्रेजी शासन पूर्ण रूप से नष्ट हो जाएगा |

महारानी तपस्विनी ने अंग्रेजों द्वारा भारत पर किए जा रहे अत्याचारों से नेपाल की जनता को अवगत कराया | रानी वहां पर राष्ट्रीयता की भावना का प्रसार कर रही थी किन्तु नेपाल के नरेश (राणा) अंग्रेजों के मित्र थे अतः रानी तपस्विनी को इच्छित सफलता प्राप्त नहीं हो सकी |

रानी तपस्विनी की मृत्यु

रानी तपस्विनी क्रांति का प्रचार करते करते नेपाल से कोलकाता पहुंची | 1902 ईस्वी में बाल गंगाधर तिलक कलकत्ता आए तो उनकी माताजी से मुलाकात हुई। 1905 ईस्वी में जब बंगाल विभाजन के विरोध आंदोलन प्रारंभ हुआ था. तब रानी तपस्विनी ने उस में सक्रिय रूप से भूमिका निभाई थी | कलकत्ता में उन्होंने 'महाभक्ति पाठशाला' खोलकर बच्चों को राष्ट्रीयता की शिक्षा दी।

रानी के साथियों द्वारा लगातार गद्दारी करने की वजह से रानी निराश हो गई थी | उनका शरीर चिंता से दिन प्रतिदिन कमजोर होता गया | धोखेबाज एवं देशद्रोही भारतीयों से वह घबरा गई | अंत में 1907 ईस्वी में भारत की महान विदुषी, देशभक्त नारी कलकत्ता में इस संसार से चल बसी | त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति रानी तपस्विनी हमें सदा गर्व रहेगा |

महान ऋषि-योद्धा के साथ समरसता के भी महान पुरोधा थे भगवान परशुराम

डॉ उमेश प्रताप वत्स

हिंदू पंचांग के अनुसार हर साल वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि पर भगवान परशुराम का जन्मोत्सव बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया जाता है। भगवान परशुराम महर्षि जमदग्नि और रेणुका की संतान है जो कि भगवान विष्णु के सभी दस अवतारों में छठें अवतार माने गए है ।

परशुराम अहिंसा की रक्षा करने के लिए शस्त्र उठाने के पक्ष में थे किंतु ऋषि जमदग्नि अस्त्र-शस्त्र उठाना गलत मानते थे । जिस कारण परशुराम जी कुछ समय के लिए आश्रम छोड़कर महेंद्र पर्वत पर चले गए । परशुराम जी की अनुपस्थिति का लाभ उठा कर राजा सहस्रार्जुन ने कुछ सैनिकों को ऋषि जमदग्नि की अद्भुत गाय सुशीला को लाने का आदेश दिया । आश्रम में पहुंचने पर ऋषि जमदग्नि ने उन्हें रोका और बहुत समझाने का प्रयास किया किंतु वे दुष्ट नहीं माने तब सुशीला की रक्षा के लिए उन्होंने अस्त्र उठाया और सबको घायल करके भगा दिया । ऋषि ने पत्नी रेणुका को कहा कि परशुराम ठीक कहता है कि अंहिसा की रक्षा के लिए हिंसा भी करनी पड़ती है । हारे हुए सेनापति को देखकर सहस्रार्जुन बौखला गया और बड़ी सेना लेकर आश्रम पर धावा बोल दिया। ऋषि व अन्य शिष्यों ने आत्म रक्षा व सुशीला की रक्षा के लिए उनका मुकाबला किया किंतु अधिक सेना होने के कारण वे लाचार होने लगे तब ऋषि ने गौ माता के समक्ष हाथ जोड़कर विनती की कि माता मुझे क्षमा करना मैं आपकी रक्षा न कर सका ,अब आप अपनी रक्षा स्वयं करें। गौ माता के चमत्कार से हजारों सैनिक प्रकट हुए और सहस्रार्जुन की सेना को नष्ट करने लगे तब धोखे से ऋषि को ढाल बनाकर सहस्रार्जुन गाय सुशीला को खोलकर ले गया। इधर परशुराम जी गुस्सा शांत होने पर आश्रम वापस आए तो घायल पिता व शिष्यों को देखकर सारी जानकारी ले सुशीला को वापस लाने सहस्रार्जुन के राज में गये जहां राजा ने चारों बेटे सुशीला का अपमान कर रहे थे । बेटों को चेतावनी देकर परशुराम सुशीला को आश्रम ले आये किंतु सहस्रार्जुन के चारों पुत्रों ने परशुराम जी से पहले

आश्रम पहुँचकर घायल ऋषि जमदग्नि का वध कर दिया । जब परशुराम जी ऋषि कक्ष में पहुँचे तो माता रेणुका मृत पति के समक्ष छाती पीट रही थी । माता को शांत करते हुए परशुराम ने प्रतिज्ञा की कि हे माता! तुमने मेरे मृत पति के समक्ष इक्कीस बार छाती पीटी है ,मैं संकल्प लेता हूं कि कायर , अत्याचारी सहस्रार्जुन के वंश को इक्कीस बार ही समाप्त करूँगा और जो उसकी सहायता के लिए आयेगा उसको भी यमलोक पहुंचाकर ही आपके समक्ष आऊंगा । तब परशुराम ने सहस्राबाहू वाले सहस्रार्जुन को उसके वंश सहित नष्ट किया तथा देने वाले पापी राजाओं को इक्कीस बार यमलोक पहुंचाकर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की। किंतु यह परशुराम जी का महान योद्धा वाला एक पक्ष है ।

परशुराम जिन्हे नारायण का अवतार माना गया है। माता-पिता के अतुलनीय भक्त होने के साथ ही वे महान ज्ञानी भी थे। भगवान परशुराम के लिए कहा जाता है कि वह अपने माता -पिता की सभी बातों का अक्षरश पालन करते थे , एक बार अपने पिता के कहने पर अपनी माता का सिर धड़ से अलग कर दिया था , जिसका बाद में उन्हे बहुत पश्चाताप भी हुआ। फिर घोर तप करके परशुराम ने अपनी माता को जीवित किया। वहीं दूसरी ओर श्रवण कुमार जिन्हे याद ही उनकी माता-पिता की सेवा के लिए किया जाता है।

मातृ पितृ देवो भवः

अर्थात् माता पिता देवता के सामान है।

श्रवण कुमार जिन्होंने अपने अंधे माँ-बाप की पुरे जीवन सेवा की और अंत में अपने कंधो पर दोनों को बैठाकर तीर्थयात्रा पर निकल गए। एक बार जब वे अपने माता-पिता को लेकर जंगल से जा रहे थे। माता-पिता को प्यास लगने पर वे निकट ही एक सरोवर से जल भरने लगे तभी वहां भगवान परशुराम भी आ गए और श्रवण कुमार से बोले -'हे बालक! मैं बहुत प्यासा हूँ , कृपया करके मुझे पानी पीला दो'

श्रवण कुमार आश्चर्य से परशुराम को देखने लगे। श्रवण कुमार ने परशुराम से कहा कि आप वेशभूषा से तो मुनिवर लगते हो किंतु आपके हाथों में कुठार व धनुष मुझे उलझन में डाल रहे हैं पर आप जो कोई भी हो उच्च कुल के लगते है , इसके बाद परशुराम श्रवण कुमार से कहते है कि मेरे कर्मो को जाने बिना ही केवल मुझे देखकर ही उच्च कुल का सिद्ध कर दिया। आगे श्रवण कहते है कि आप जरूर ही किसी ऋषि के पुत्र होंगे लेकिन मैं ठहरा एक छोटी जाती कि माता का पुत्र। श्रवण कि इन बातों को सुन परशुराम क्रोधित हो उठे बोले -"बालक मां कभी छोटी जाति की नहीं होती है,मां तो मां होती है। कर्मो से व्यक्ति की असली पहचान होती है छोटी जाती उच्च कुल ऐसा कुछ नहीं होता।

'जन्मना जायते शूद्र:

कर्मणा द्विज उच्यते' ।

अर्थात् जन्म से सभी शूद्र होते हैं और कर्म से ही वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बनते हैं।

वर्तमान दौर में 'मनुवाद' शब्द को नकारात्मक अर्थों में लिया जा रहा है। ब्राह्मणवाद को भी मनुवाद के ही पर्यायवाची के रूप में उपयोग किया जाता है। जबकि शास्त्रों में कहीं भी ऐसा वर्णन नहीं है।

ये समझाने के बाद परशुराम ने फिर श्रवण कुमार से पानी पिलाने का आग्रह किया, तो श्रवण कुमार ने उन्हें बहुत ही प्यार से पानी पिलाया।

जब श्रवण कुमार ने परशुराम से उनका परिचय माँगा तब श्रवण कुमार को पता चला कि यह तो भगवान परशुराम है जिनके दर्शन आज उसे हुए है। वह स्वयं को बहुत ही भाग्यशाली समझने लगा।इसके बाद श्रवण कुमार ने बताया कि वह अपने माता-पिता को लेकर तीर्थ यात्रा पर निकले। तब परशुराम कहते है कि मुझे यहाँ कोई रथ या किसी तरह का कोई अन्य वाहन दिखाई नहीं दे रहा है फिर कैसे तीर्थ यात्रा पर जा रहे हो। इस पर श्रवण कुमार ने बताया कि मैं बहुत साधारण परिवार से हूँ मेरे पास रथ आदि की कोई व्यवस्था नहीं है किन्तु माता पिता की आज्ञा का पालन करना मेरा धर्म है। इसी धर्म की पालना करने के लिए मैं कंधे पर ही अपने माता-पिता को पालकी में उठाकर पैदल ही तीर्थयात्रा कराने के लिए निकल पड़ा हूँ।

श्रवण की इन बातों को सुन परशुराम भावुक हो उठे ओर उनसे अपने माता -पिता से मिलाने का आग्रह कर बोले मैं उन माता-पिता के चरण स्पर्श करना चाहूंगा जिन्होंने तुम जैसे संतान को जन्म दिया है। भगवान परशुराम ने श्रवण के माता-पिता के चरण स्पर्श किए। श्रवण के माता पिता को जब ज्ञात हुआ कि स्वयं भगवान परशुराम आये हैं। अत्यन्त गद-गद हुए। भगवान परशुराम ने श्रवण कुमार को आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी यात्रा मंगलमय हो। उन्होंने कहा कि जब तक यह संसार रहेगा श्रवण तुम्हारा नाम माता-पिता के भक्त बेटे के रूप में श्रद्धा से लिया जायेगा।

वास्तव में परशुराम जी महान ऋषि जमदग्नि-रेणुका जी के पुत्र ,महान ज्ञानी , महान योद्धा और सभी वर्णों में उत्पन्न होने वाले सामान्य व्यक्तियों को भी एकसा सम्मान देते थे जिस कारण उन्हें भगवान परशुराम कहा जाता है।

माना जाता है कि भगवान परशुराम आज भी इस धरती पर जीवित विचरण कर रहे है।

शास्त्रों में अष्टचिरंजीवियों का वर्णन कुछ इस तरह से मिलता है।

अश्वत्थामा बलिव्यासो हनूमांश्च विभीषण: कृप: परशुरामश्च सप्तएतै चिरजीविन:॥
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् जीवेद्वर्षशतं सोपि सर्वव्याधिविवर्जित॥

अर्थात: आठ चिरंजीवियों में भगवान परशुराम समेत महर्षि वेदव्यास, अश्वत्थामा, राजा बलि, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य और ऋषि मार्कंडेय हैं जो आज भी इस कलयुग में विचरण कर रहे हैं।

राजा बलि- भक्त प्रहलाद के वंशज हैं राजा बलि। भगवान विष्णु के भक्त राजा बलि भगवान वामन को अपना सबकुछ दान कर महादानी के रूप में प्रसिद्ध हुए। इनकी दानशीलता से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने इनका द्वारपाल बनना स्वीकार किया था।

परशुराम- भगवान विष्णु के दशावतारों में एक हैं परशुराम। अक्षय तृतीया के दिन जन्म लेने के कारण ही भगवान परशुराम की शक्ति भी अक्षय थी। परशुरामजी ने पृथ्वी से 21 बार अधर्मी क्षत्रियों का अंत किया गया था।

हनुमानजी- त्रेता युग में श्रीराम के परम भक्त हनुमानजी को माता सीता ने अजर-अमर होने का वरदान दिया था। इसी वजह से हनुमानजी भी चिरंजीवी माने जाते है।

विभीषण- रावण के छोटे भाई और श्रीराम के भक्त विभीषण भी चिरंजीवी हैं।

वेद व्यास- वेद व्यास चारों वेदों ऋग्वेद, अथर्ववेद, सामवेद और यजुर्वेद का संपादन और 18 पुराणों के रचनाकार हैं।

अश्वत्थामा- गुरु द्रोणाचार्य का पुत्र अश्वथामा भी चिरंजीवी है। शास्त्रों में अश्वत्थामा को भी अमर बताया गया है।

कृपाचार्य- महाभारत काल में युद्ध नीति में कुशल होने के साथ ही परम तपस्वी ऋषि है। कृपाचार्य कौरवों और पांडवों के गुरु थे।

ऋषि मार्कंडेय- भगवान शिव के परमभक्त ऋषि मार्कंडेय अल्पायु थे, लेकिन उन्होंने महामृत्युंजय मंत्र सिद्ध किया और वे चिरंजीवी बन गए।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भगवान परशुराम ने श्रीकृष्ण को सुदर्शन चक्र दिया था। दरअसर गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण के दौरान भगवान कृष्ण की मुलाकात परशुराम जी से हुई तभ उन्होंने भगवान कृष्ण को सुदर्शन चक्र दिया था।

भगवान परशुराम का जन्म माता रेणुका की कोख से हुआ था। जन्म के बाद इनके माता-पिता ने इनका नाम राम रखा था। बालक राम बचपन से ही भगवान शिव के परम भक्त थे। ये हमेशा ही भगवान की तपस्या में लीन रहा करते थे। तब भगवान शिव ने इनकी तपस्या से

प्रसन्न होकर इन्हें कई तरह के शस्त्र दिए थे जिसमें एक फरसा भी था । फरसा को परशु भी कहते हैं इस कारण से इनका नाम परशुराम पड़ा।

परशुराम जी का जन्म ब्राह्माण कुल में हुआ था। उनका यह अवतार बहुत ही तीव्र, प्रचंड और क्रोधी स्वाभाव का था। भगवान परशुराम ने अपने माता-पिता के अपमान का बदला लेने के लिए इस पृथ्वी को इक्कीस बार अत्याचारी क्षत्रियों का संहार करके विहीन किया था। इसके अलावा अपने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए अपनी माता का भी वध कर दिया था। लेकिन वध करने के बाद पिता से वरदान प्राप्त करके फिर से माता को जीवित कर दिया था।

भगवान परशुराम जी के महान ज्ञानी , अवतारी होने के बाद भी भक्त श्रवण कुमार के साथ किया गया संवाद यह प्रेरणा देता है कि कोई भी जीव छोटा-बड़ा नहीं है। जीव को उसके कर्म छोटा-बड़ा बनाते हैं । अतः हमे सबके साथ एकसा व्यवहार करना चाहिए तभी भगवान परशुराम जी के जन्मोत्सव का उद्देश्य पूर्ण हो पायेगा।

ग़ज़ल

केशव शरण

ज़रा देख ले ये थमी ज़िन्दगी
नदी किस तरह बह रही ज़िन्दगी

पसीना सुखा ले तले पेड़ के
अभी दूर मंज़िल थकी ज़िन्दगी

पता है कि तेरा सनम बेवफ़ा
पता है बहुत तू दुखी ज़िन्दगी

पचासों बरस से रहा देख मैं
अभी तक नहीं तू लगी ज़िन्दगी

बुरे लोग तुझको बहुत हैं मिले
बहुत ही रही तू भली ज़िन्दगी

खिले फूल हैं ख़्वाब पूरे हुए
दिखा दे मुझे वो घड़ी ज़िन्दगी

मुझे जग कहे इक नया आदमी
तुझे जग कहे इक नई ज़िन्दगी

गयी बीत रुत यार आया नहीं
किया वायदा था निभाया नहीं

रहे हों भले ग़ैर उसके लिए
हमारे लिए वो पराया नहीं

नहीं याद पहली नज़र से कभी
नज़र फेरने तक सताया नहीं

बड़ी बोर होती यही ज़िंदगी
करम आशिक़ी का उबाया नहीं

मिलन में विरह में गयी उम्र सब
मगर प्यार का राज़ पाया नहीं

तमन्ना करो और आहें भरो
किसी भी करम का बकाया नहीं

बहुत प्यार का मूल्य लेकिन सिफ़र
अगर दर्द दिल में समाया नहीं

भ्रष्टाचार – कारण और निवारण

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Corruption : Historical Background) भ्रष्टाचार एवं घुसखोरी कोई नई अवधारणा नहीं है । सदियों पूर्व हिन्दू विधि के प्रवर्तक महर्षि ने ' मनु सहिता ' में तत्कालीन समाज में व्याप्त घूसखोरी का स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया है । अन्य अनेक ग्रन्थों तथा यात्रा वृतान्तों में भी भ्रष्यचार का उल्लेख देखा जा सकता है ।

आचार्य कौटिल्य (चाणक्य , 330-275 ई.पू.) ने ' अर्थशास्त्र ' में लिखा है कि " जिस प्रकार तालाब में तैरती मडली कब पानी गटक जाती है कोई देख नहीं सकता , उसी प्रकार मौकरशाही में अधिकारी वर्ग कबष्ट आचरण करे यह पता लगाना मुश्किल है । "

भारत में भ्रष्टाचार को जड़े अत्यन्त गहरी हो चुकी है । मर्यादाएं धीरे - धीरे नष्ट हो रही हैं । नैतिक मूल्यों के पतन के कारण सार्वजनिक जीवन में प्रष्टाचार दीमक की तरह व्याप्त होकर को खोखला किए जा रहा है भ्रष्टाचार या रिश्वतखोरी वह है जब अधिकार सम्पन्न व्यक्ति अपने पद / प्रभाव का अनुचित लाभ प्राप्ति हेतु स्वार्थपूर्ण तरीके से करता है ।

भारत में रिश्वतखोरी और प्रत्येक क्षेत्र सामाजिक , वैधानिक , आर्थिक , राजनीतिक , राजनयिक , प्रशासनिक क्षेत्रों सकता है । भ्रष्टाचार सभी प्रकार के अपराधों में वृद्धि करने के लिए जिम्मेदार है । भारत में चंद नेता खास अफसर , लामबन्द व्यापारी , उद्योगपति , बदनाम गुण्डे , तथाकथित वगैरसरकारी संगठन (NGO) (नेता , बाबू , लाला , दादा , बाबा , एवं झोला) भ्रष्टाचार के स्तम्भ हैं |

भ्रष्टाचार समस्या और समाधान

वर्तमान समय में भ्रष्टाचार एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन गई है । नैतिक आदर्शों की अपेक्षा व सच्चरिता का अभाव भ्रष्टाचार कहलाता है । भ्रष्टाचार (भ्रष्ट + अचार) परिभाषा की दृष्टि से एक मनोविकार है जो लोकरहित की भावना की जगह स्वहित की भावना को जन्म देता है ।

चूंकि यह प्रवृत्ति सकारात्मक नहीं होती इसलिए इससे मनुष्य के नैतिक मूल्यों का हास होता है । विद्वान मोटिरों के अनुसार " भ्रष्टाचार वह कार्य है जिसमें अधिकार सम्पन्न व्यक्ति अपने पद स्तर या प्रभाव का प्रयोग अनुचित लाभ की प्राप्ति के लिए अनुपयुक्त एवं स्वार्थपूर्ण ढंग से करता है ।

कौटिल्य ने ' अर्थशास्त्र ' में भ्रष्टाचार का वर्णन करते हुए कहा कि " जिस प्रकार जिहा पर रखे हुए शहद का स्वाद न लेना असम्भव है उसी प्रकार किसी शासकीय अधिकारी के लिए राज्य के राजस्व के एक अंश का भक्षण न करना असंभव है । "

भारतीय दण्ड संहिता की धारा (6) में कहा गया कि

जो व्यक्ति राजकीय कर्मचारी होने की आशा में अपने लिए या किसी अन्य व्यक्ति के लिए विविध पारिश्रमिक से अधिक घूस लेता है या स्वीकार करता है या लेने के लिए । तैयार हो जाता है या लेने का प्रत्यन्न करता है , या किसी कार्य को करने के लिए उपहारस्वरूप या अपने शासकीय कार्य करने में किसी व्यक्ति के प्रति पक्षपात और उपेक्षा या किसी व्यक्ति की सेवा या सेवा का प्रयास केन्द्रीय या अन्य राज्य सरकार या संसद या विधानमण्डल या किसी लोक सेवा के सन्दर्भ में करता है , तो इसे तीन वर्ष के कासवास या दण्ड या अर्थ दण्ड या दोनों दिये जा सकेंगे ।

वर्तमान में भारतीय प्रशासन में भ्रष्टाचार की बाढ़ सी आई है जैसा कि रत्नास्वामी के इस कथन से कि" भ्रष्टाचार भारतीय प्रशासन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य रहा है "से स्पष्ट होता है

भारतीय प्रशासन में भ्रष्टाचार के रूप का उल्लेख करते हुए लेखक ने लिखा कि

" मुगल शासकों द्वारा उत्पादित, आग्ल शासकों द्वारा लाड़ - दुलार से पोषित भ्रष्टाचार की वह रूपवती जनकल्याण के लिए पिशाचिनी बन गई थी । जिसने आशा , विश्वास तथा धैर्य के स्निग्ध लावण्य आलोक की आमा को अपने काले आँचल में लगभग लिया जाता है ।

आज प्रशासन का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र है जो इस महाछत्र की विशाल छाया से अपने को वंचित रख सका है ।

भ्रष्टाचार किसी समय या देश विदेश की समस्या नहीं है । इसे हर काल , हर जगह किसी न किसी रूप में पाया जाता है । भ्रष्टाचार के लिए किसी स्तर का भी निर्धारण नहीं किया जा सकता है । यह एक चपरासी से लेकर प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति तक में पाया जाता

है । जापान का भर्ती कांड , अमेरिका का वाटर गेट काण्ड, भारत में बोफोर्स बोटाला, यूरिया घोटाला, रेल वैगन खरीद घोटाला , चारा घोटाला इत्यादि से सिद्ध कर दिया कि भ्रष्टाचार की जड़ें प्रत्येक स्तर तक है ।

भारत में भ्रष्टाचार प्राचीन काल से रहा है । प्राचीनकाल के राजाओं के राजस्व अधिकारी व कर एकत्रित करने वाले अधिकारी, राजस्व वसूली का एक बहुत बड़ा भाग स्वयं हड़प लिया करते हैं ।

रामायण , महाभारत और मौर्यकाल में भ्रष्टाचार के स्पष्ट उदाहरण देखने को मिले हैं , मुगलकाल में भ्रष्ट्राचार ने अपने पंख और फैलाये , अकबर महान का काजी अब्दुलनवी मडडेमाश बनाने का भी भ्रष्टाचार किया करता है ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासनकाल में अंग्रेज अधिकारियों ने राजस्व पुलिस , न्यायालय व आबकारी जैसे क्षेत्रों में भ्रष्टाचार से बहुत धन कमाया | स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् आज तक भारत में भष्टाचार के अनेकानेक उदाहरण सामने आये हैं । जैसे जीप घोटाला 1947 , रत्न घोटाला 1949 , नागर वाला काण्ड 1982 , बोफोर्स घोटाला 1987 , शेयर घोटाला 1992 , ए.बी.वी. इंजन घोटाला 1993 , चीनी पोटाला 1994 , हवाला काण्ड 1995 , यूरिया काण्ड 1996 , आवास घोटाला , जय ललिता का अकुत सम्पदा एकत्र करने का प्रकरण ।

लालू यादव जगन्नाथ मिश्र व पूर्व केन्द्रीय मंत्री सहित कई उच्च प्रशासनिक अधिकारी राजनेता का 10 अरब रुपये के बिहार के चारा घोटाला में मुख्य अभियुक्त है ।

भारत में केन्द्रीय निरीक्षण आयोग ने भ्रष्टाचार के निम्न 27 प्रकारों का उल्लेख किया है - निम्न स्तरीय वस्तुओं को स्वीकार करना , सार्वजनिक धन का दुरुपयोग करना , झूठे दौरे , भत्ते , गृह किराया का दावा करना , अपनी आय से अधिक वस्तुओं को रखना , बिना पूर्व सूचना वा

अनुमति के अचल सम्पति अर्जित करना , प्रसाद या अन्य कारणों से शासन को हानि पहुंचाना शासकीय पद का दुरुपयोग करना , भर्ती , नियुक्ति , स्थान्तरण के सम्बन्ध में गैर कानूनी रूप से धन लेना , शासकीय कर्मचारियों का व्यक्तिगत प्रयोग करना , जन्म तिथि और समुदायों फर्जी प्रमाणपत्र बनाना , रेल व वायुयान में स्थान सुरक्षित करने में अनियमितता , शासकीय कर्मचारियों को जानकारी एवं सहयोग से विभिन्न फर्मों द्वारा आयातित एवं निर्धारित फोटो का दुरुपयोग , टेलिफोन कनेक्शन देने में अनियमितता , अनैतिक आचरण , उपहार ग्रहण करना , आर्थिक लाभ हेतु आयकर सम्पत्ति कर का कम मूल्यांकन करना , स्कूटर कार खरीदने हेतु स्वीकृत अग्रिम धन राशि का दुरूपयोग , विस्थापितों के दावों को निपटाने में विलम्ब करना विस्थापितों के दावों का गलत मूल्यांकन , आवासीय भूमिकों के विक्रय में कब्जा तथा उसे किराये पर देना आदि । कारण भ्रष्टाचार के आर्थिक , सामाजिक राजनीतिक कारण विशेष रूप से उल्लेखनीय है स्वता के पूर्व कोटा परमिट , लाइसेंस राज के सदृढ़ होने के कारण भ्रष्टाचार बढ़ाधिक कारणों ने भी भ्रष्टाचार को आश्रय दिया । महंगाई में वृद्धि के अनुपात से कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि नहीं होती अंत : अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सरकारी कर्मचारी घूस का सहारा लेते हैँ

प्रत्येक देश का एक राष्ट्रीय चरित्र होता है | जिससे उसकी पहचान बनती है

जैसे जापानी परिश्रमी होते हैं , अंग्रेज राष्ट्रभक्त होते हैं, फ्रांसीसी सौंदर्य प्रेमी होते हैं इसी संदर्भ में यदि भारतीय लोगों की कोई मूलभूत विशेषता बतानी हो तो हम कह सकते हैं कि भारत के अधिकतर लोग भ्रष्टाचार के दलदल में फंसे हुए हैं अतः भ्रष्टाचार हमारी पहचान है हमारा राष्ट्रीय चरित्र है

यह एक कड़वा सच है जिसे स्वीकार करने में कोई बुराई नहीं स्वतंत्रता के बाद हमने स्वस्थ सरकार की कल्पना की थी किंतु हमारी कल्पना यथार्थ की जमीन पाकर भ्रष्टाचार को चारों ओर व्याप्त देख रही है ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहां भ्रष्टाचार को जगह नहीं मिली हुईव्यापारी वर्ग आयकर की चोरी करते हैं, सरकारी कर्मचारी रिश्वत लेते हैं, अध्यापक ट्यूशन की दुकानें चला

रहे हैं तो प्रोफेशनल कर चोरी में संलग्न है प्लीज नौकरशाही दोनों हाथों से जनता को लूट रहे हैं अधिकारी लाखों की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार हो रहे हैं रक्षा की सौदों में दलाली खाई जा रही है और तहलका डॉट कॉम जब इसका पर्दाफाश करता है तो उसके खिलाफ जांच आयोग बिठा दिया जाता है |सरकारी कर्मचारी दोनों हाथों से जनता को लूट रहे हैं, सरकारी कार्यालयों में बिना भी पूजा की चढाये कोई भी काम नहीं हो सकता | पुलिस की मामूली दरोगा या चार पांच वर्ष की नौकरी में राजा महाराजाओं जैसी सुविधाएं प्राप्त कर ली जाती है, कोई उनसे नहीं यह पूछता कि अपने इतने से वेतन में ये सारी सुविधाएं कैसे जुटा लीं हैं? लाखों की संपत्ति को कहां से खरीद लेते हैं?

राजनीति में भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है नेता भ्रष्ट तरीकों से चुनाव जीतते हैं और सिद्धांत विहीन गठबंधन करके मंत्री का पद हथिया लेते हैं राजनीतिक पार्टियां औद्योगिक घरानों से चंदे के नाम पर बड़ी रकम ऐठ लेती हैं और फिर उन्हें लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से नीतिगत निर्णय लिए जाते है| समाज में भ्रष्ट लोगों का आदर बढ़ गया है, धन कहां से अर्जित किया है इसकी और कोई ध्यान नहीं दिया जाता सच तो यह है कि आज हमने भ्रष्टाचार से अर्जित धन को मान्यता प्रदान कर दी है भ्रष्टाचार के बलबूते पर धन अर्जित कर के लोग सम्मान प्राप्त कर रहे हैं और समाज यह जानते हुए भी कि यह धन बेईमानी से अर्जित किया गया है उसका कोई तिरस्कार नहीं करता | परिणामतः भ्रष्टाचार को पनपने में सहायता मिलती है आज ईमानदारी नैतिकता सत्य को अपमानित होना पड़ता है ईमानदार इंसान को लोग मूर्ख पागल गांधी का अवतार कहकर खिल्ली उड़ाते हैं और बेईमान को इज्जत देते हैं ऐसे समाज में कौन मूर्ख ईमानदार बनना चाहेगा

भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए सरकार ने कई कानून बनाए हैं लेकिन वे अधिक प्रभावी नहीं हो सके हैं कहा ये जाता है कि भ्रष्टाचार की जड़ें ऊपर की ओर होती हैं यदि किसी विभाग का मंत्री या सचिव रिश्वत लेता है तो उसका चपरासी भी भ्रष्ट ही होगा अतः भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए ऊपर के पदों पर योग्य व ईमानदार लोगों को आसीन किया जाना चाहिए

कर्तव्यनिष्ठ व ईमानदार लोगों को सरकार व समाज की ओर से सम्मानित किया जाना चाहिए तथा नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा को अनिवार्य कर देना चाहिए शिक्षकों एवं समाज के अन्य जिम्मेदार नागरिकों को विद्यार्थियों के समक्ष आदर्श उपस्थित करना चाहिए भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों का समाज के द्वारा सामाजिक तिरस्कार बहिष्कार किया जाना चाहिए

जब समाज से दहेज प्रथा की बुराई समाप्त करने के प्रयास किए गए चाहिए तब भी भ्रष्टाचार में कमी आएगी आयकर विभाग के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति से उसकी आय व्यय का हिसाब किताब पूछा जाना चाहिए | सरकारी कर्मचारियों पर विशेष निगाह रखी जानी चाहिए इससे भी अनुचित साधनों से धन अर्जित नहीं कर सके संभव हो तो उनकी संपत्ति की खुफिया जांच भी कराई जानी चाहिए उनके रहन-सहन के स्तर को भी देखा परखा जाना चाहिए

यदि इन उपायों को ईमानदारी से लागू कर दिया जाए तो कोई कारण नहीं कि हम भ्रष्टाचार की समस्या से छुटकारा ना पा सके

भ्रष्टाचार से निपटने के उपाय

· लोगों को विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को सब्सिडी और सरकारी अनुदानों के बारे में उनके हक की पूरी जानकारी दी जाए । सूचना का अधिकार ईमानदारी से लागू हो ।

· नीतियों और फाइलों में किए गए विभिन्न निर्णयों को पारदर्शी बनाया जाए । हर आवेदक को जानने का अधिकार होना चाहिए कि उसका आवेदन पत्र कहाँ रुका पड़ा है ।

· विलम्ब ही भ्रष्टाचार का मुख्य स्रोत है । हर विभागीय अध्यक्ष या हर कार्यालय के प्रमुख को किसी आवेदन या फाइल पर निर्णय करने के लिए समयावधि निर्धारित कर देनी चाहिए , जिससे कि किसी भी स्तर पर कार्यवाही में देरी न हो । अगर फाइलों पर कार्यवाही में देरी होती है तो उसके लिए जो कारण हो वह ऐसा हो , जिससे प्रमुख या अध्यक्ष संतुष्ट हो । फाइलों पर कार्यवाही में देर इसलिए न की जाए ताकि लाभार्थी उस पर कार्यवाही तेज़ करवाने के लिए रकम देने के लिए हाजिर हो

· जब कभी भी पता चले कि कोई कर्मचारी भ्रष्ट तरीके अपना रहा है , तो उसे तुरंत निलम्बित कर देना चाहिए । मुकदमा और विभागीय अनुशासनात्मक कार्यवाही साथ - साथ शुरू कर दी जाए और जल्द से जल्द पूरी की जाए ।

· जिन भ्रष्ट व्यक्तियों के खिलाफ कानूनी या अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू की जाती है उनकी सम्पत्तियों को सील कर दिया जाना चाहिए और उनके टोपी सरकार को उन सम्पत्तियों को जब्त कर लेना चाहिए ।

· अधिकारी ऐसे होने चाहिए जो केवल प्रतिभावान और योग्य ही न हो , अपितु और साहसी भी हो ।

· लोकतंत्र में निर्वाचित प्रतिनिधियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है , लेकिन उन्हें नजदीकी अधिकारियों को लाभ पहुंचाने के लिए नियमों की अवहेलना करते हुए तबादलों और पदोन्नतियों जैसे मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए ।

· विभिन्न स्तरों पर अधिकारियों का चयन करते समय यह सुनिश्चित कर लेना कि वे ईमानदार ही और उस कार्य के लिए योग्य हॉ , जो उन्हें सौंपा जा रहा है ।

· देश ने पंचायती राज और सत्ता के विकेन्द्रीकरण के सिद्धांत को स्वीकार कर लिया है । इसीलिए सत्ता का यथासंभव विकेन्द्रीकरण किया जाना चाहिए , और पंचायतों को अधिकतम अधिकार दिए जाने चाहिए ।

· नियमों को सरल बनाया जाना चाहिए । अनेक कानून ऐसे हैं जिन्हें जनसाधारण समझ नहीं पाता । अनावश्यक कानून खत्म कर दिए जाने चाहिए । कानून और नियमों का यथासंभव सरलीकरण किया जाना चाहिए ।

राजस्थान में भ्रष्टाचार नियंत्रण के लिए नए कानून –

राजस्थान गारंटी ऑफ पब्लिक सर्विस एक्ट 2011 (14 नवम्बर 2011 से लागू) , राजस्थान राइट टू हियरिंग एक्ट 2012 (1 अगस्त 2012 से लागू) , राजस्थान स्पेशल कोर्ट्स एक्ट

2012 (13 दिसम्बर 2012 से लागू) एवं राजस्थान ट्रांस्पेरेन्सी इन पब्लिक प्रोक्योरमेंट एक्ट 2012 (26 जनवरी 2013 से लागू) ।

भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम (Prevention of Corruption Act , 1988) , समिति केन्द्रीय सतर्कता आयोग (CVC Central Vigilance Commission) , समिति 1993 (N.N. Voha Committee) , हाल ही में पारित लोकपाल भ्रष्टाचारको नियंत्रित करने हेतु अनेक प्रयास किए गए हैं ।

साक्षात्कार

डॉ. शेखर चन्द्र जोशी
विभागाध्यक्ष (चित्रकला)
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय

नमस्कार सर

सर नई गूँज पत्रिका आपका हार्दिक अभिनंदन करती है |

सर साक्षात्कार के इस मंच पर आप से रूबरू होने का यह अवसर हमारे लिए महत्वपूर्ण है, हमारा और हमारे पाठकों का सौभाग्य है कि आपके जीवन अनुभवों से हम शिक्षा ले पाएंगे |

सर्वप्रथम आपका धन्यवाद

डॉ0 शिवा स्वयं व श्री बृजेश कुमार जी

प्रश्न -1. सर, सबसे पहले हम आपका नाम व वर्तमान में आपके पद के बारे में जानना चाहेंगे |

उत्तर. मेरा नाम शेखर चन्द्र जोशी है। मैं वर्तमान में सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्ष चित्रकला के पर पर कार्यरत हूँ।

प्रश्न -2. आप की प्रारंभिक शिक्षा व परिवार के बारे में कुछ बताइए |

उत्तर. मेरी प्रारम्भिक शिक्षा महानगर लखनऊ, कुमाउ में द्वाराहाट के समीप गांव छतेनाखाल तथा गढ़वाल में उत्तर काशी व कर्णप्रयाग (चमोली) में हुई। लखनऊ कला एंव शिल्प महाविद्यालय से डिप्लोमा इन ए0एम0टी0, गढ़वाल विश्वविद्यालय से मास्टर्स पीएच0डी0 तथा कुमाउ विश्वविद्यालय

से डी0लिट0 प्राप्त किया। मेरे पिताजी पुलिस वायरलेस में कार्यरत थे तथा उन्होंने रेडियो केन्द्र अधिकारी के पद से स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति ली क्योंकि उन्हें ग्लूकोमा (आंखों की गंभीर बीमारी) हो गयी थी । मेरी माता श्री का स्वर्गवास जब मै कक्षा 6 मे उत्तरकाशी में था तब हो गया था हम दो भाई व दो बहिनें हैं। पिताश्री ने बहुत त्याग व कठिन परिस्थितियों में जीवन पर्यंत विधुर रहते हुए हम सबका लालन-पोषण व नौकरी की। छोटा भाई व उसका परिवार कनाडा में तथा दोनों बहिने रूद्रपुर व हल्द्वानी में अपने-अपने ससुराल में हैं। मेरी पत्नी गीता जोशी का मेरे परिवार में सबकी उन्नति के लिए बड़ा योगदान है। पिताजी का स्वर्गवास हुए आज तीन वर्ष हो चुके है। मेरे दो बेटे (शादी-शुदा) तथा बड़े बेटे के दो बेटे , यानि मेरे दो पोते हैं।

प्रश्न-3. सर, आपने किन-किन क्षेत्रों में आपने अपना योगदान प्रदान किया है?

उत्तर. मेरा योगदान शिक्षा, कला तथा समाज सेवा में रहा है। मुख्य रूप से कला चित्रकारिता व इससे जुड़ी विधाओं में मैंने कार्य किया है, और कर रहा हूँ। तैल माध्यम में बनी मेरी कृति (चित्र) शीर्षक 'उत्तराखण्ड का संघर्ष' जिसे ललित कला अकादमी नई दिल्ली ने कलकत्ता में उनके द्वारा आयोजित कला मेला में क्रय किया था इस चित्र में उत्तराखण्ड राज्य के प्राप्ति के दौरान किये गये संघर्ष को दर्शाया गया है।

वर्तमान में मेरे द्वारा सृजित 'नखक्षत चित्र' काफी चर्चित हैं। जिनकी एकल प्रदर्शनियां उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी लखनऊ, आइफेक्स नई दिल्ली, राष्ट्रीय ललित कला अकादमी नई दिल्ली तथा फ्रांस के नैन्सी में आयोजित हुई। अभी हाल ही मेरा नखक्षत चित्र शीर्षक 'अफेक्शन' (प्रेम) इटली के फैब्रियानों इन एक्केरेलो का हिस्सा बना है। इसके माध्यम से मेरा मानना है कि दुनिया में अफेक्शन (प्रेम) ही मानवता की सच्ची पहचान है जो सदियों से होता आया है इसमें मेरे द्वारा प्रागैतिहासिक एवं प्राचीन समयकाल की जड़ों से ही निहित मानते हुए दर्शाया है जो कि भारत की कला संस्कृति की मूल भावना है। राष्ट्रीय सेवा योजना में मैंने कार्यक्रम अधिकारी रहते हुए कई वर्षों तक इसकी भावना के अनुरूप कार्य किया।

कुमाऊ विश्वविद्यालय में दृश्य कला संकाय स्थापित करने में जिसका कि मैं कई वर्षों तक संकायाध्यक्ष भी रहा कुमाऊ विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्ष चित्रकला में भी मेरी सेवाऐं कई वर्षों तक

रहीं। आसाम केन्द्रीय विश्वविद्यालय सिल्यर में रीडर इन फाइन आर्ट के पद पर कार्य करना भी एक उपलब्धि ही मानता हूँ।

प्रश्न-4. सर, आप लेखन, प्रकाशन व अंतरराष्ट्रीय जनरल के कार्य संचालन से जुड़े रहे हैं हमारे पाठकों को आपके जनरल एवं प्रकाशन के कार्यों के बारे में कुछ बताएं |

उत्तर. सत्य है कि चित्रकारिता के साथ लेखन भी मेरा प्रिय रहा। आसाम से ही मैंने इंटरनेशनल जर्नल ऑफ विजुअल आर्टस स्टडीज एवं कम्यूनिकेषन का संपादन एवं प्रकाशन किया जो एक दशक से भी अधिक सुचारू रूप से प्रकाशित होता रहा। यू0जी0सी0 द्वारा इसे अपनी लिस्ट में नामित न किये जाने से मुझे गहरा कष्ट हुआ और इसे रोकना पड़ा जिसका दुःख सभी को है। मेरे द्वारा कई पुस्तकें दो दर्जन से अधिक लिखी व संपादित की गई हैं। मेरी पुस्तकों का शीर्षक- आर्ट एवं कम्यूनिकेशन ऑफ इंडिया, हिस्टोरिकल फाइन आर्टस एडं एशियन कल्चर, विजुअल आर्टस एंड रिसर्च मैथेडोलॉजी, ट्राइबल आर्टस एडं क्राफ्टस ऑफ उत्तराखण्ड, कोरिया की कला आदि हैं। चित्रकारिता में मेरे चित्रों को 'नखक्षत चित्र' के रूप में अभिनव और अनूठी शैली के लिए जाना जाता है जो कि कलम, पेंसिल, ब्रश, रंग के बिना ही उनके नाखूनों द्वारा कागज पर अंकित किया जाता है। इसके अतिरिक्त इन्हें रंग के साथ भी कागज व कागज को कैनवास पर गद्दीदार सिक्कों द्वारा सृजित किया जाता है। मेरी इस विद्या पर कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय तथा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में छात्राओं ने लघु शोध प्रबन्ध के रूप में कार्य किया है।

प्रश्न-5. लेखन के कार्य तथा उसके प्रकाशन के कार्य से एक लेखक न सिर्फ अंतर्मन में आत्म संतुष्टि प्राप्त कर सकता है बल्कि समाज में आवश्यक बदलाव भी ला सकता है इस विषय में आपके क्या विचार हैं?

उत्तर. लेखक अपनी रचनाओं से समाज में जागृति ला सकता है। मेरा एक कविता संग्रह, जिसमें मेरे रेखांकन भी है। 'सेवा से सृजन' कुछ इसी भावना को प्रदर्शित करता है। पुस्तकें एक सच्ची दोस्त होती हैं जो प्रत्येक क्षेत्र में दिशा निर्देश व प्रेरणा देती है। समाज को लेखन से भी तदनुसार मिलता है जब समाज के लोग लेखन को पढ़ने में तदनुसार रूचि दिखायें।

प्रश्न-6. सर आज का युवा वर्ग लेखन के प्रति उदासीन हो चुका है, आप इसके लिए किसे जिम्मेदार मानते हैं?

उत्तर. युवा वर्ग का लेखन के प्रति उदासीन होने में वह स्वयं जिम्मेदार है तथा आज के कम्प्यूटर, डिजीटल व वैश्विक परिदृश्य से भी लेखन के प्रति रूचि कम हुई है। प्रारम्भ से ही मोबाइल, कम्प्यूटर के उपयोग के कारण युवा वर्ग लेखन से विमुख हो रहा है ऐसा में समझता हूँ। इनमें बोल देने मात्र से ही जब शब्द वाक्य टंकित हो जाते हैं तो अन्य दूसरा लेखन की प्रवृत्ति भी कमतर हो रही है। लेखन संबंधी प्रत्येक जानकारी आज अब इंटरनेट व गूगल आदि में उपलब्ध होने के कारण भी इसमें कमी आ रही है।

प्रश्न-7. सर, आप की सबसे बड़ी ताकत क्या है?

उत्तर. मेरी सबसे बड़ी ताकत मेरी कला व इसमें जुड़े कार्यों के प्रति प्रतिबद्धता है। समय पर काम करना (डेड लाइन वर्किंग) ही मेरी ताकत है जिसमें आप जैसे लोगों द्वारा, पूर्व में भी अन्य के द्वारा दिये गये सहयोग ही मेरी ताकत बनती है। बिना रूके अनवरत चलते रहना ही यानि कला कर्म करना ही मुख्य ताकत है।

प्रश्न-8. सर, आप जीवन में आज जिन उपलब्धियों को हासिल कर सके वहां तक पहुंचने के मार्ग में आपके सर्वप्रथम प्रेरणा स्रोत कौन रहे, जिन्हें आप अपनी हर सफलता का श्रेय देना चाहेंगे |

उत्तर. मैं अपने गुरूजन व पिताश्री को ही इसका श्रेय देता हूँ। पार्श्व में माता श्री स्व0 पारवती देवी की छत्र-छाया एक देवी के रूप में रही है। गुरूजनों में सभी स्व0 इम्तियाज अली खान, सुरेश्वर सेन, डॉ0 रणवीर सक्सेना, डॉ0 सरला रमन आदि जिनकी मेरे ऊपर विशेष अनुकम्पा रही है। प्रो0 रणवीर सिंह बिष्ट मेरे प्रेरणा स्रोत रहे।

प्रश्न-9. सर आपके विचार में आज की शिक्षा पद्धति में क्या अपेक्षित बदलाव होने चाहिए?

उत्तर. मेरे विचार में आज की शिक्षा पद्धति में हमें उसके प्रति ईमानदारी, पारदर्शी व समपर्ण की भावना से ही कार्य करना चाहिए। शिक्षा में भी देश काल परिस्थिति के अनुरूप कार्य होना चाहिए। मैदान, रेगिस्तान, पहाड़ व अन्य स्थलों पर एक ही मॉडल से शिक्षा की उसके परिवेश के अनुरूप साम्यता लाने

में, बनाने में हम वहां के विद्यार्थियों के साथ न्याय कर पा रहे हैं क्या? सोचना होगा। ग्रामीण (रूरल) तथा अर्बन (शहरी) दोनों में जो भिन्नता है उसके परिवेश के अनुरूप शिक्षा के अवयवों तथा ढॉचे में समय के साथ संतुलन बनाने व उसकी स्वतंत्रता की आवश्यकता है।

प्रश्न-10. सर आपकी वे उपलब्धियां जो आपको गौरवान्वित अनुभव कराती हैं?

उत्तर. मेरी उपलब्धियों में कोरिया फाउंडेशन की अंतराष्ट्रीय शोध वृत्ति, देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुलकलाम के हाथों शिक्षा की उच्च उपाधि डी0लिट् प्राप्त करना तथा इससे भी पूर्व में नखक्षत विधि से निर्मित उनका मुख चित्र उन्हें भेंट करना जब उन्होंने बड़ी उत्सुकता से मुझसे पूछा कि दिखाओं कैसे बनाते हो। कला व संस्कृति के कार्यक्रमों में संसार में एक दर्जन से भी अधिक दशों (कनाडा, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, साउथ अफ्रीका, आस्ट्रिया आदि हैं) का भ्रमण व भागीदारी मुझे गौरवांवित करती है। आगामी 3-5 मई 2023 में मुझे 9जी वर्ल्ड समिट ऑन आर्ट एडं कल्चर पर स्वीडन के स्टोकहोम में प्रतिनिधि के रूप में भागीदारी करनी है।

मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि कला व शिक्षा के क्षेत्र में सेवा करते हुए मेरा 30 से अधिक वर्षों का व्यापक शिक्षण तथा अनुसंधान अनुभव के साथ 10 साल से भी अधिक विभिन्न पदों पर कार्य करने का प्रशासनिक अनुभव भी है।

सर आपके अनुभवों को जानकर हमें और हमारे पाठकों को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा मिलेगी| सर आपका पुन: बहुत| बहुत धन्यवाद-

डॉ शिवा स्वयं
संपादक
नई गूँज पत्रिका
जयपुर

रोचक तथ्य

Bhakti सरोवर ™
श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास कृत
श्रीरामचरितमानस
रामायण
क्या आप जानते हैं ?
100 सालों से भी ज्यादा लंबे वक्त से छत्तीसगढ़ की रामनामी समाज में एक अनोखी परंपरा चली आ रही है। इस समाज के लोग पूरे शरीर पर राम नाम का टैटू बनवाते हैं, लेकिन न मंदिर जाते हैं और न ही मूर्ति पूजा करते हैं।
© bhaktisarovar.in

Follow @gk_everyday
@gk_everyday
परीक्षाओं की शुरुआत करने वाला पहला देश कौनसा था ?
- China

ऐसा कौनसा देश है
जहाँ एक भी नदी नहीं
पाई जाती?
सऊदी अरब

FACTIFIED
भारत का स्टेचू ऑफ यूनिटी
स्पेस में से भी दिखाई देता हैं,
इसे बनाने में 3 हजार करोड़
का खर्चा आया था।

ऐसा कौनसा देश है जहाँ एक भी पेड़ नहीं है?
कतर

@gk__india___
भारत में कलर टीवी की शुरुआत 1962 ई. में हुई थी।

Praggya institute

M- 11 SERIES (MAINS)

Contains - 11 papers of law, language, judgement writing and mock

OUR SERVICES

- Mains writing techniques
- Marks / Remarks / Ranking
- Discussion
- Online and offline

REGISTRATION OPEN

9351177710,
www.praggya.com
praggya. rjs@gmail.com

Praggya Institute
A Step Towards Success

RJS
(PRE & MAINS)
ONLINE LIVE + OFFLINE COACHING

स्कॉलरशिप टेस्ट में भाग ले और 90% तक स्कॉलरशिप प्राप्त करें !

* MORNING AND EVENING BATCHES
* MONTHLY INSTALLMENT FEES FACILITY AVAILABLE
* PRE + MAINS TEST SERIES FREE
* DOUBT CLEARING SESSIONS
* INTERVIEW PREPARATION FREE
* REVISION CLASSES FREE

MORE INFORMATION

+91-9351177710
+91-8079061006
www.praggya.com
pragya.rjs@gmail.com

Praggya Institute
A Step Towards Success
www.praggya.com

RJS
52 Pre & Mains
Test Series

- Subject wise
- Law+language
- Essay
- Judgement writing
- Complete syllabus mock papers

Join us Now

Remarks + Marks +
Discussion with faculty on each paper

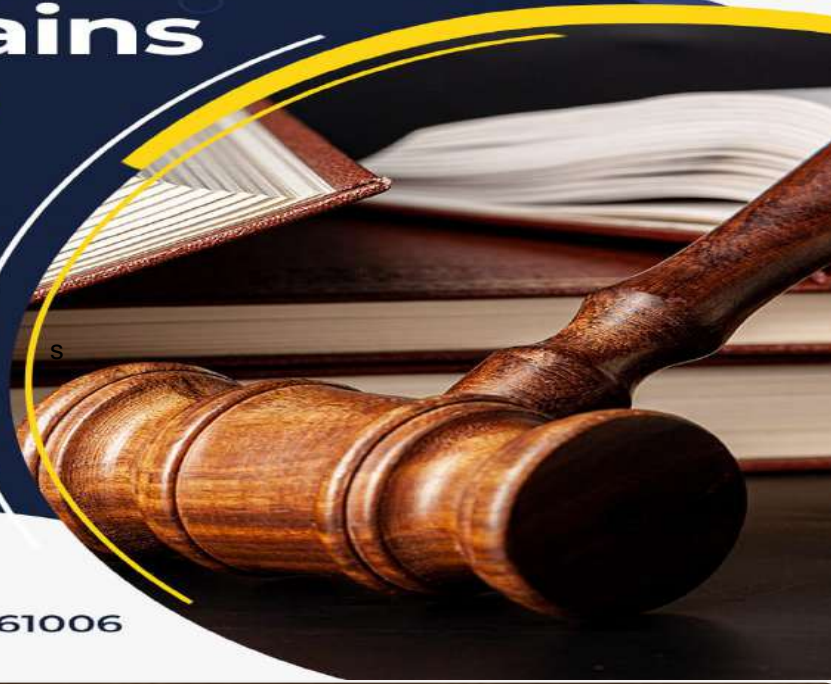

More information call us
+91- 9351177710, +91-8079061006

Future Divine

Weekend course of judicial classes

Saturday and Sunday

For LL.B.students

Pre , mains, interview , pre and mains test series

+91-89554 80471

futuredvn01@gmail.com

मई अंक 2023 के लेखक परिचय

- गिरेंद्र सिंह भदौरिया
  prankavi@gmail.com
  9424044284
  6265196070
  पता :- वृत्तायन 957 स्कीम नंबर 51
  इंदौर मध्य प्रदेश पिन :-452006

- डॉ घनश्याम बादल
  215, पुष्परचना, गोविंद नगर
  रुड़की
  9412903681
  Ghansyambadal54@gmail.com

- बृजेश कुमार
  Aryabrijeshsahu24@gmail.com
  9785837924
  पता - जुरेहरा भरतपुर राज.
  321023

- प्रिया देवांगन "प्रियू"
  राजिम
  जिला -गरियाबंद
  छत्तीसगढ़

Priyadewangan1997@gmail.com

- डॉ उमेश प्रताप वत्स
  14 शिवदयाल पुरी
  निकट आईटीआई
  यमुनानगर हरियाणा
  पिन कोड – 135001
  मोबाइल नंबर- 9416966424
  Umeshpvats@gmail.com

- डॉ आर बी भंडारकर
  सी -9 स्टार होम
  रोहित नगर फेस-2
  भोपाल, 462039
  dr.r.b.bhandarkar@gmail.com

- डॉ शिवा धमेजा
  Drshivadhameja01@gmail.Com
  पता :- 140A गायत्री नगर जयपुर
  9351904104

- श्यामल बिहारी महतो
  बोकारो झारखंड
  Shyamalwriter@gmail.com

- केशव शरण

  वाराणसी

  9415295137

  Keshavsharan564@gmail.com

UDYAM-RJ-17-0210612

Goonj nayi @gmail.com

शोध, साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट पत्रिका

नई गूँज

Design by -rahul deewan

Sign up at www.nayigoonj.com
9785837924